सम्पादकीय
जनमन में रम जायें 'श्रीराम' 2

केरल में आयोजित हो रहे हैं कन्या कौशल शिविर 4

उत्तर प्रदेश में राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञों ने झकझोरे जाग्रत् आत्माओं के अंतर्मन 6

संतों की भूमि सौराष्ट्र की दिव्यता को नमन और नवजागरण का संदेश 7

जन्मदिवस
यह दैवी अभियान सतत बढ़ता ही रहेगा। - **श्रद्धेया शैल जीजी** 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

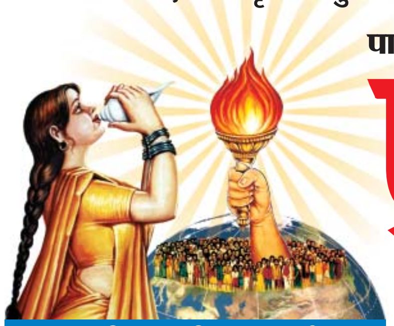

नारी सशक्तीकरण वर्ष

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जनवरी 2024

वर्ष : 36, अंक : 14

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जनवरी 2024

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2021-23 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2021-23

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

भारतीय लोकचेतना में प्रवाहित होने वाली अंतर्धारा है राम

सदियों के संघर्ष के बाद राम जन्मभूमि अयोध्या में भगवान श्रीराम के भव्य मंदिर के निर्माण और प्राण प्रतिष्ठा के पावन पर्व पर हृदय में रामनाम की धुन बज रही है। प्रभु राम का वही नाम, जिसका गुणगान बाबा तुलसी ने 'रामचरितमानस' में किया है। बड़ी महिमा बखानी है उन्होंने राम के नाम की। अनेक चमत्कार गिनाए हैं उन्होंने रामनाम के। इस पवित्र प्रभुनाम का स्मरण करते ही सारे कार्य अपने आप ही सिद्ध हो जाते हैं। रामनाम के सहारे बहरे सुनने लगते हैं, गूँगे बोलने लगते हैं और लूले लंगड़े-अपाहिज दुर्गम पर्वत शिखरों पर चढ़ जाते हैं। महा असंभव को सहज संभव करने वाला है यह राम का नाम। गोसाईं बाबा के इस कथन में केवल शास्त्रवचनों की पुनरुक्ति भर नहीं है, बल्कि उनका अपना अनुभव भी समाया है। वे कहते हैं-

नाम राम को कल्पतरु, कलि कल्यान निवासु।
जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु॥

अर्थात् कलियुग में राम का नाम मनचाहा फल देने वाला कल्पतरु है। यह सब तरह के कल्याण का घर है, जिसके स्मरण भर से भाँग की तरह से निकृष्ट तुलसीदास तुलसी की तरह पवित्र और पूजनीय हो गया।

रामनाम की महिमा यों तो हर युग में है, पर कलियुग में तो कुछ विशेष ही है। जप, तप, योग आदि जगत के सारे पराक्रम रामनाम में समाए हैं। प्रभु श्रीराम जैसा दाता कोई दूसरा नहीं। उन्होंने गिद्ध, जटायु, आदिवासी, स्त्री शबरी को वह सब दे डाला, जो योग-साधना करने वाले ऋषि-मुनि जन्म-जन्मों में नहीं पाते। अमिट और अपार है प्रभु राम के नाम का प्रभाव। इसी के प्रभाव से तो वनवासी वाल्मीकि 'महर्षि' हो गए। अपने गोसाईं बाबा तुलसीदास को भी कौन पहचान पाता राम के नाम बिना। रामनाम की कथा ने ही तो उन्हें महाकवि के साथ जनकवि बना दिया। वे युगातीत और कालजयी हो गए। रामनाम की ही भाँति तुलसी का नाम भी मृत्युंजय बन गया है।

चमत्कारी शक्ति है राम

रामनाम की यह चमत्कारी शक्ति पिछली सदी में एक बार फिर से प्रकट हुई। गाँधी बाबा के हृदय में भी अपने गोसाईं बाबा की ही भाँति रामधुन बजी। रामनाम के अमोघ अस्त्र के सहारे गाँधी बाबा ने भारत की करोड़ों निःशस्त्र जनता को महापराक्रमी और अजेय समझे जाने वाले अँगरेजों के खिलाफ खड़ा कर दिया। अगणित जातियों, अनेक धर्मों-संस्कृतियों, असंख्य भाषाओं बोलियों में बँटी हुई, एक-दूसरे से अलग-थलग रहने वाली इस देश की जनता गाँधी की रामधुन पर मंत्रमुग्ध हो गई। गाँधी बाबा के आदेश पर मिटने के लिए संकल्पित हो गई। सारे संसार ने बड़े ही अचरज से इस चमत्कार को घटित होते हुए देखा। जिन अँगरेजों के राज्य में कभी सूरज अस्त नहीं होता था, उसे गाँधी बाबा ने बिना किसी तोप-बंदूक के यों ही खदेड़ दिया। यह महा आश्चर्य राम के नाम की उसी महिमा से साकार हुआ, जिसकी चर्चा गोसाईं बाबा ने रामचरितमानस में की है।

राम के नाम में अनेक रहस्य हैं, असंख्य चमत्कार हैं। बापू को ऐसी हैरतअंगेज लोकप्रियता कहाँ से मिली ? उनकी लोकप्रियता से हैरान फ्रांस के यशस्वी लेखक रोम्या रोलां ने कहा था कि गाँधी जी के पास कोई अलौकिक शक्ति जरूर है। उनकी इसी जादुई ताकत से करोड़ों भारतीय पल भर में सम्मोहित हो जाते हैं। जब वे अनशन पर बैठते हैं तो असंख्य भारतवासी खाना छोड़ देते हैं। जब वे मौन होते हैं तो अगणित भारतीय बोलना छोड़ देते हैं। जब वे चलते हैं तो करोड़ों भारतवासी उनके पीछे चल पड़ते हैं। जब वे जेल जाते हैं तो अँगरेजों के जेलखानों में कैदियों को रखने के लिए तिल भर भी जगह नहीं बचती । गाँधी बाबा की इस लोकप्रियता से हैरान रोम्या रोलां ने लिखा है, ''जरूर उन्होंने कोई महामंत्र सिद्ध किया था, जिसके बल पर वे अपराजेय ब्रिटिश साम्राज्य को पराजित कर भारतीय स्वाधीनता के नये युग की शुरूआत कर सके।'' वह चमत्कारी महामंत्र प्रभु राम का वही नाम था, जिसका बखान और गुणगान तुलसी बाबा ने अपनी 'रामायण' में किया है।

राम के नाम के साथ राष्ट्रपिता ने राम के राज्य का भी स्वप्न देखा था। पश्चिमी विज्ञान और आधुनिकता के मोहपाश में जकड़े हुए कतिपय लोगों को भले ही बापू का यह स्वप्न अवैज्ञानिक और पुरातन लगे, पर इतिहास इस सत्य की प्रामाणिकता की बेबाक गवाही देता है। अठारहवीं सदी में हुई फ्रांस की क्रांति के किस्से जिनने पढ़े हैं, जिनने 1997 में हुई रूसी क्रांति की लाल किताब पढ़ी है, वे जानते हैं, ये दोनों ही आज अपनी खुशबू छोड़कर बासी हो चुके हैं, लेकिन रामराज्य के आदर्श में अभी भी ताजगी है। इसमें शाश्वतता और चिरंतरता है।

सबमें राम, सबके राम

ध्यान रहे, प्रभु राम और उनका नाम किसी एक धर्म विशेष अथवा जाति विशेष की धरोहर नहीं है। जो उनको किसी जाति अथवा धर्म की धरोहर मानता है, उसके लिए न तो प्रभु राम वरदायी रह जाते हैं और न उनका नाम फलदायी होता है। भीलनी शबरी के जूठे बेर खाने वाले, बूढ़े जटायु का अंतिम संस्कार अपने हाथों करने वाले राम तो सबके हैं। उनकी कथा-गाथा केवल इस उपमहाद्वीप के समुदायों और संप्रदायों तक ही सीमित नहीं है, इंडोनेशिया, बाली, जावा, सुमात्रा, म्यामार तक इसकी संवेदन-सरिता प्रवाहित है।

राम भारत देश की महासंस्कृति के महानायक हैं। उनकी महागाथा आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, दलितों, गिरिजनों के बीच तो है ही, दक्षिण के शैव और मातृपूजक भी इसकी संवेदना का संस्पर्श पाते हैं। उत्तर-पूरब के नगा, मेघ और मैतेइये भी राम के नाम से अपरिचित नहीं हैं। राम की कथा के अनेक रूप हैं, अनेक रंगों में ढली है रामनाम की भावना। अपने गोसाईं बाबा ने तो कहा भी है-

जाकी रही भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी।

क्षेत्र, वर्ग, संप्रदाय के हिसाब से लोकचेतना ने राम की अपनी मूरत बनाई, पर मूलभावना कभी अलग-अलग नहीं रही। यह ठीक है कि राम तुलसी के भी थे और सूफी संत जायसी के भी। जिन्होंने भारत के इतिहास को गहराई से पढ़ा है, वे यह सचाई भी जानते हैं कि राम की छवि तो बाबर के बेटे हुमायूँ के सिक्कों पर भी अंकित थी। लोकचेतना के शिखरपुरुष राम के सामने अकबर और उसका दीन-ए- इलाही भी सिज्दा करता था।

'सबके राम-सब में राम' इसी भाव से विभोर होकर बापू ने राम और उनके नाम को भारतवासियों के संगठन का सूत्र बनाया था। पश्चिमी दर्शन की दकियानूसी सोच से अलग 'रामराज्य' का शुद्ध स्वदेशी मॉडल नई पीढ़ी के सामने रखा था। बापू के रामराज्य के राम हिंदुओं के भी उतने ही थे, मुसलमानों के भी उतने ही, सिखों और ईसाइयों का भी उन पर उतना ही हक था। राम और उनका नाम भारत की लोकचेतना और उसकी एकात्मता का प्रतीक था।

हम यहाँ इन पंक्तियों में आश्चर्यजनक किंतु सत्य तथ्य का उल्लेख करना चाहते हैं। वह आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि भारतीय लोकचेतना में सर्वव्यापी राम की हिंदुओं के चारों धामों में कहीं केंद्रीय उपस्थिति नहीं है। संभवतः यह इसलिए कि जन-जन में बसे राम और उनके नाम को सीमाओं में सिमटना नहीं भाया। जो लोग राम और उनके नाम को जाति, धर्म, वर्ग एवं क्षेत्र में समेटने की कोशिश में लगे हैं, वे कभी राम के नहीं हो सकते और राम कभी उनके नहीं हो सकते।

राम तो भारतीय लोकचेतना में प्रवाहित होने वाली अंतर्धारा है, जो निर्गुण-निराकार रूप में सतत भारत के जनमानस में बहती रहती है। दुष्टों के विनाश और साधुजनों के कल्याण के लिए युग-युग में उनका सगुण प्राकट्य होता है। दशरथ के घर में जन्म लेने वाले राम, सांस्कृतिक अभ्युत्थान का संकल्प लेने वाले श्रीराम के रूप में हमारे अपने युग में जन्मते हैं। मनुष्य रूप में हम सबके बीच विचरने वाले प्रभु भक्तों के हृदय में भी अवतार लेते हैं। बस, हमारे अपने हृदय में रामनाम की सच्ची धुन तो बजे, फिर सुर-नर हितकारी और उनके नाम के चमत्कारों की शृंखला प्रारंभ होने की देर नहीं।

श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी,
अखण्ड ज्योति, अप्रैल 2003, पृष्ठ 35 से सम्पादित

जनमन में रम जायें 'श्रीराम'

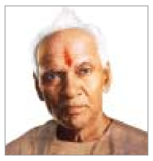

नवयुग के श्रीराम

भारतभूमि देवभूमि है। यह वह भूमि है जिसकी प्राण चेतना ने असंख्यों बार मानवता को संकट से उबारा है। जब-जब भी धरती पर असुरता देवत्व पर हावी होती दिखाई दी, तब-तब एक दिव्य ईश-चेतना ने अवतरित होकर असुरता के पर काटे और देवत्व को उभारा है।

अपनी अवतार परम्परा के अंतर्गत त्रेता युग के भगवान राम और द्वापर में भगवान कृष्ण, यह दो ऐसे अवतार हुए हैं जिन्होंने अपने समय की असुरता को न केवल परास्त किया, बल्कि तत्कालीन समाज में असुरता से संघर्ष करने का साहस और उत्साह भी जगाया। दोनों ही अवतार ऐसे हैं, जिन्होंने सामान्य मानवीय जीवन जीते हुए अपने व्यक्तित्व और कृतित्वों से समाज को मानवोचित आदर्श जीवन जीने की शिक्षा दी है।

भगवान राम 'मर्यादा पुरुषोत्तम' कहलाते हैं। उन्होंने बताया कि राजकुमार या राजा के रूप में हों या एक सामान्य वनवासी के रूप में, समाज के हर रिश्तों की मर्यादा का पालन करते हुए मानव धर्म का पालन किस प्रकार किया जाना चाहिए। भगवान श्रीकृष्ण ने तो श्रीकृष्णार्जुन संवाद के रूप में गीता का वह उपदेश भी दिया है, जो वर्तमान समय में भी सारे विश्व में जीवन प्रबंधन का श्रेष्ठतम ग्रंथ माना जाता है। राम और कृष्ण भारतीय जीवन शैली में प्रवाहित होने वाली दो दिव्य प्राण धारायें हैं, जो हर मानव में सतत उत्साह का संचार करते हुए जीने की राह दिखाती हैं।

नवयुग के 'श्रीराम' परम पूज्य गुरुदेव वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी भी उसी सनातन अवतार परम्परा के अंतर्गत अपने जीवन से आज की भूली-भटकी मानवता को जीने की सही राह दिखाने आए हैं। अपने अकूत तपोबल से अदृश्य जगत में प्रचण्ड हिलोरें उत्पन्न कर असुरता को नियंत्रित करने वाले युगऋषि परम पूज्य गुरुदेव स्वयं कहा करते थे कि दृश्य जगत में उनकी जो भी सिद्धियाँ दिखाई देती हैं, वह उनके ब्राह्मण जीवन की ही सिद्धियाँ हैं। सर्वविदित है कि पूज्य गुरुदेव ने एक सामान्य मानव की तरह जीवन जीते हुए ही वह हर धर्म निभाया है, जिसकी अपेक्षा सामान्य से सामान्य व्यक्ति से भी की जाती है। व्यक्तिगत जीवन के उत्कर्ष, पारिवारिक जीवन में प्रेम-सद्भाव का विस्तार हो या सामाजिक जीवन में संघर्ष का कोई भी प्रसंग हो, उन्होंने अपने व्यक्तित्व और कार्यों से हर क्षेत्र में निज धर्म निभाने की प्रेरणा दी है।

अभूतपूर्व सुअवसर

इन दिनों हमारे देश में मानवीय चेतना के उत्थान का एक अभूतपूर्व पर्व मनाया जा रहा है, जिसने सारी विश्व मानवता का ध्यान आकर्षित किया है। लगभग 500 वर्षों के संघर्ष के बाद भगवान राम की जन्मभूमि में एक भव्य राम मंदिर के निर्माण का अवसर आया है। पूरे देश में उत्सव है। यहाँ बात मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की नहीं है। मंदिर तो देश में हजारों हैं, एक से एक भव्य हैं, लेकिन लम्बे संघर्ष के बाद रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में जो राष्ट्रीय चेतना का जागरण हो रहा है, वह अभूतपूर्व है। देश के हर मानव में 'राम' रूपी सुप्त चेतना का पुनर्जागरण हो रहा है, वह असाधारण है। इस दिव्य सुयोग का लाभ उठाते हुए हम सबको मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के दिव्य गुणों का स्मरण अवश्य करना चाहिए। केवल स्मरण ही नहीं करना चाहिए, बल्कि वर्तमान युग में 'श्रीराम' के सान्निध्य के सुयोग को अवसर में बदलने का हर संभव प्रयास भी करना चाहिए। **केवल पाठ-संकीर्तन से सच्ची भक्ति सिद्ध नहीं होती। सच्ची भक्ति तो रामकाज करना और राम के बताए जीवन पथ पर चलना है। मानवीय चेतना के इस अभूतपूर्व पर्व पर हम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन आदर्शों को याद करें और अपना युगधर्म निभायें, इसी में हमारी समझदारी है, इसी में जीवन की सार्थकता है। जनमन में राम रम जायें तो जीवन धन्य हो जाए।**

राम और श्रीराम एक हैं

मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के जीवन प्रसंगों पर दृष्टि डालें तो हमें परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी में उसी ईश-चेतना के दर्शन होते हैं। वे भी भगवान राम के जीवन-आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा देते हैं। आज हमें भगवान राम का जो भव्य स्वरूप दिखाई देता है, यदि वैसा ही स्वरूप उनके सशरीर रहते दिखाई दे रहा होता तो हर कोई उनके प्रति नतमस्तक हो जाता। अपने समय में तो वे एक सामान्य राजकुमार या एक संतमना वनवासी ही रहे होंगे। यदि वे भगवान के रूप में पहचान लिए जाते तो आपत्तिकाल में अकेले रीछ-वानरों की सेना के सहारे ही क्यों रह जाते।

आज परम पूज्य गुरुदेव हमें एक सामान्य मानव दिखाई देते हैं, हमारी 'भगवान' की कल्पनाओं के अनुरूप नहीं। इसीलिए सिद्धियों और चमत्कारों के भ्रमजाल में भटक रही मानवता उनके बताये जीवन के उत्थान के सरल से उपाय 'गायत्री और यज्ञ' को अपनाने का उत्साह नहीं दिखा पा रही। उस जमाने में भी भक्त हृदय वनवासियों, रीछ-वानरों ने भगवान राम को पहचाना और साथ दिया था, आज भी गहन आस्थावान सर्वसामान्य लोग ही उनके वास्तविक स्वरूप के दर्शन कर पा रहे हैं। ऐसे लोग ही 'सादा जीवन-उच्च विचार' की रीतिनीति अपनाते हुए सतयुग की वापसी और रामराज्य की स्थापना में अपना योगदान दे रहे हैं।

जैसा कि रामायण में लिखा है, उस समय की दिव्यात्माओं ने, ऋषि-मुनियों ने भगवान राम के वास्तविक स्वरूप को पहचाना था, नमन किया था। इस युग में भी देवराहा बाबा, महात्मा आनन्द स्वामी, करपात्री जी महाराज, महात्मा विनोबा, डॉ. राधाकृष्णन जैसे अनेक संतों ने उनके विराट व्यक्तित्व को जाना है। जो ऋषियों को और सच्चे संतों को बोध होता है, उस पर सामान्य मानव विश्वास कहाँ कर पाते हैं? फिर भी उपरोक्त संतों ने परम पूज्य गुरुदेव के विराट व्यक्तित्व के संकेत तो दिये ही हैं। जो ज्ञानी हैं, समझदार हैं, वे आज भी अपनी भक्तिभावना और पात्रता के अनुरूप राम, कृष्ण की तरह पूज्य गुरुदेव के विराट व्यक्तित्व के दर्शन कर रहे हैं और लाभ उठा रहे हैं।

> **बात मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा की नहीं है। मंदिर तो देश में हजारों हैं, एक से एक भव्य हैं, लेकिन लम्बे संघर्ष के बाद रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में जो राष्ट्रीय चेतना का जागरण हो रहा है, वह अभूतपूर्व है। देश के हर मानवी में 'राम' रूपी सुप्त चेतना का पुनर्जागरण हो रहा है, वह असाधारण है।**

तब और अब

भगवान राम, कृष्ण और पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी एक ही उद्देश्य के लिए अवतरित दिव्य चेतना के विभिन्न रूप हैं। इनके प्रति हमारे सच्चे भक्तिभाव से ही वर्तमान युग में छाई असुरता का अंत हो सकेगा। **आज राम जन्मभूमि अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा हो रही है, लेकिन मानवता का हित तो रामराज्य की स्थापना में है, जिसमें सर्वत्र शान्ति हो, परस्पर प्रेम और सद्भाव हो, सबके हित की कामना हो, सबके लिए समान न्याय की व्यवस्था हो। यही युग निर्माण योजना के प्रणेता परम पूज्य गुरुदेव का भी संकल्प है।** अयोध्या में श्रीराम मंदिर की स्थापना से जागी समूह चेतना के प्रवाह में हम भगवान राम के जीवन-आदर्शों का स्मरण करते हुए भजन, संकीर्तन, पूजा-पाठ से आगे बढ़ें और रामकाज में जुट जायें, यही आज का युगधर्म है।

भगवान राम के जीवन का हर प्रसंग कर्त्तव्यपरायणता, मर्यादा और आदर्शों का पाठ पढ़ाता है। युग निर्माण आन्दोलन भी यही प्रेरणा देता है, देखेंः-

भगवान राम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघ्न जी का जन्म शृंगी ऋषि द्वारा कराये गए पुत्रेष्टि यज्ञ के प्रभाव से हुआ था। आज परम पूज्य गुरुदेव ने देवमानवों के अवतरण के लिए यज्ञ-संस्कार परम्परा को पुनर्जीवित किया है। समाज जितनी तेजी से इन्हें अपनाएगा, उसी अनुपात में देवमानवों का उद्भव होता जाएगा।

रामचरित्रमानस की प्रसिद्ध चौपाई है-

गुरु गृह पढ़न गए रघुराई, अल्पकाल विद्या सब पाई।

शिक्षा की वर्तमान व्यवस्था के अंतर्गत स्कूल एवं अन्य शिक्षण संस्थानों में किताबी शिक्षा तो मिल जाती है, लेकिन नर-मानव को देवमानव बनाने वाली जीवन विद्या तो समर्थ गुरु के सान्निध्य में और आस्तिकता के आवरण में ही मिल पाती है। प्राचीनकाल की तरह के गुरुकुल तो आज उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन गायत्री परिवार द्वारा बाल संस्कार शाला, कन्या/किशोर कौशल शिविर, व्यक्तित्व विकास कार्यशालाएँ जैसे समानान्तर शिक्षा के अनेक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं, उनका समाज में विस्तार करने की आवश्यकता है।

आज के युग में परिवारों में अधिकांश झगड़े धन-सम्पत्ति के लिए, जमीन जायदाद के लिए होते हैं। प्रायः परिवारों में, विशेषकर स्त्रियों में अधिकार की लड़ाई देखी जाती है। जो राम के उपासक हैं, उन्हें अपने इष्ट से इतना तो सीखना ही चाहिए कि पारिवारिक सुख-शान्ति का आधार स्वार्थ नहीं, त्याग होता है। माता कैकेई ने अपने पुत्र भरत के लिए राजपाट माँग लिया और राम के लिए वनवास। इस पर स्नेह की प्रतिमूर्ति श्रीराम को लेशमात्र भी आपत्ति नहीं हुई और उन्होंने अपनी माँ की ख़ुशी के लिए तथा पिता के वचनों के पालन के लिए हँसते-हँसते राजपाठ छोड़ दिया। इतना ही नहीं, भैया लक्ष्मण और पत्नी सीता भी स्वेच्छा से महलों का सुख छोड़कर दुर्गम वन के कंटक मार्ग पर निकल पड़े। इस वियोग से भरत भी कहाँ ख़ुश थे? उन्होंने भैया का आदेश मानकर एक तपस्वी की भाँति उनकी पादुकाओं को साक्षी मानकर ही तो 14 वर्षों तक राज्य की व्यवस्थायें सँभाली थीं।

भगवान राम के प्रति भक्ति का तात्पर्य है जीवन में परस्पर द्वेष-दुर्भाव को समाप्त कर ऐसे निश्छल प्रेम और सद्भाव का विस्तार करना। आशंका, अनास्था, अविश्वास में आकंठ डूबे समाज में आस्था रूपी अमृत और प्रेम रूपी पारस का संचार तो माँ भगवती गायत्री की उपासना से जाग्रत् आत्मशक्ति के आधार पर ही संभव है। आज अध्यात्म के उस सच्चे स्वरूप को अपनाने की आवश्यकता है, जिसका अर्थ है-आत्मीयता का विस्तार।

त्रेता युग में निषादराज केवट हों, पक्षीराज जटायु अथवा राम के आगमन की नित्य प्रतीक्षा करते हुए आँगन बुहारने वाली माता शबरी; उन सभी ने राम के क्या ऐसे ही दिव्य अलंकारिक रूप के दर्शन किए होंगे, जिस रूप में वे आज पूजे जाते हैं? संभवतः उन्होंने तो एक साधारण तेजस्वी वनवासी के रूप में ही उन्हें देखा होगा। उनके अंतःकरण के प्रेमभाव ने ही उनमें भगवान की छवि का दर्शन कराया होगा। ऐसा दिव्य प्रेम मन में जाग जाए तो आज भी हर किसी को उस भागवत स्वरूप के दर्शन हो सकते हैं, उनका स्नेह-संरक्षण प्राप्त हो सकता है। पक्षीराज जटायु ने संभवतः एक स्त्री पर हो रहे अत्याचार से उसे बचाने के लिए ही अपने प्राण गँवाये होंगे। यह भाव यदि आज के रामभक्तों में आ जाए तो कमाल हो जाए। जहाँ भी ऐसा दिव्य प्रेम होगा, वहाँ केवल स्वर्ग ही बसा दिखाई देगा।

भक्ति का दूसरा नाम है हनुमान, जो हर पल परछाईं की तरह भगवान राम का साथ देते दिखाई देते हैं। जब भी कोई संकट आया, हनुमान संकट मोचक बन गए। आज भगवान को पूजापाठ, संकीर्तन, दर्शन करने वालों से कहीं ज्यादा रामराज्य की स्थापना में सहयोग करने वाले भक्त हनुमानों की आवश्यकता है। प्रयास करें कि हममें से हर व्यक्ति एक अंश में ही सही, भगवान की हनुमान जैसी भक्ति कर पाये।

भगवान राम के जीवन के अनंत प्रसंग हैं, हर प्रसंग प्रेरणादायी है। आवश्यकता है उन प्रगतिशील प्रेरणाओं को हृदयंगम कर अपने जीवन को उनके आदर्शों के अनुरूप ढालने की। भगवान राम की दिव्य चेतना आज भी असुरता के दमन के अपने पुराने संकल्प के साथ सक्रिय है। हम अपने सच्चे भक्तिभाव को जगायें और रामकाज में पूरी तन्मयता के साथ जुट जायें।

अखण्ड ज्योति के प्राकट्य का शताब्दी वर्ष और परम वंदनीया माताजी का जन्मशताब्दी वर्ष-2026 परम पूज्य गुरुदेव के सतयुगी संकल्पों को साकार करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है। परिवर्तन के इन महान क्षणों में अपने विवेक को जगाकर हम ईश्वर के विराट स्वरूप-इस संसार की जितनी सेवा कर सकेंगे, उसी अनुपात में धन्य हो जायेंगे, भगवान की अनुकम्पा-अनुदान पायेंगे।

'आओ बनाएँ व्यसनमुक्त भारत' अभियान

गाँव-गाँव आयोजित हो रहे हैं व्यसनमुक्ति प्रधान कार्यक्रम

अकोला। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार अकोला के डॉ. सुरेश राठी और उनके साथी कार्यकर्त्ताओं द्वारा इन दिनों आओ बनाएँ व्यसनमुक्त भारत अभियान को तीव्र गति दी जा रही है। व्यसनों के कारण बर्बाद होती जवानी पर अंकुश लगाने के लिए विद्यालयों में व्याख्यान रखे जा रहे हैं और अन्य जहाँ भी अवसर मिलता है, गायत्री परिवार की टोली नशामुक्ति सहित विविध रचनात्मक अभियानों के प्रति लोगों को जागरूक कर रही है। डॉ. राठी ने बताया कि इन कार्यक्रमों में पर्यावरण, गौपालन जैसे समसामयिक विषयों के प्रति भी लोगों को जागरूक किया जाता है।

उद्बोधन देते डॉ. सुरेश राठी

विद्यालयों में संगोष्ठियाँ अन्य रचनात्मक आन्दोलनों को भी गति दी जा रही है

प्रथम कार्यक्रम तहसील मुर्तिजापुर जयाजी महाराज विद्यालय, हिरपुर में आयोजित हुआ। विद्यालय के अध्यक्ष श्री भाऊसाहेब डाबेराव ने बच्चों के प्रति गायत्री परिवार की सजगता और संवेदनशीलता का अभिनंदन करते हुए डॉ. राठी का सम्मान किया। कार्यक्रम में सभी शिक्षक, शिक्षिकाएँ और कक्षा 8,9,10 के बच्चे उपस्थित थे।

22 दिसम्बर को ऐसा ही कार्यक्रम बुलढाणा जिले की तहसील मलकापुर के गाँव वडनेर भोलजी में स. मोहता विद्यालय में सम्पन्न हुआ। डॉ. सुरेश राठी के अलावा डॉ. अजय उपाध्याय, श्री देवचंद कावले, सौ. रजनी उपाध्याय, कु. सोनु काबरा, गोकर्णा ताई, सौ. सातपुते ताई ने बच्चों के उत्कर्ष की इस योजना में प्रशंसनीय योगदान दिया, सत्संकल्प कराए। 700 शिक्षक-शिक्षिकाएँ और विद्यार्थियों ने प्रेरणा प्राप्त की।

अकोला जिले के ग्राम चिखलगाँव नाशिक के श्री टेकाडे महाराज की भागवत कथा का कार्यक्रम चल रहा था। इसमें 23 दिसम्बर को पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार अकोला की टीम ने इस अवसर पर व्यसनमुक्ति का बड़ा प्रभावशाली संदेश दिया। परिणाम स्वरूप अनेक ग्रामवासियों ने गुटखा, तंबाकू, बीड़ी, सिगरेट, शराब आदि त्यागने की देवदक्षिणा यज्ञ भगवान को समर्पित की। डॉ. सुरेश राठी, श्री गजानन दैय्या गुरूजी, श्री संदीप नादुरकर सौ. नादुरकर, सौ. खारोले की टीम ने यज्ञ संचालन के साथ विविध रचनात्मक आन्दोलनों के प्रति लोगों का ध्यान आकर्षित किया।

देव दक्षिणा में छोड़ा नशा

चिखलगाँव, अकोला। महाराष्ट्र

दिनांक 23 दिसम्बर को ग्राम चिखलगाँव में पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं भागवत पुराण कथा का आयोजन हुआ। डॉ. सुरेश राठी ने गाँववासियों को व्यसन मुक्ति की प्रभावशाली प्रेरणाएँ दीं, परिणाम स्वरूप अनेक लोगों ने तंबाकू, गुटखा, बीड़ी, विमल पुडिया, शराब आदि व्यसनों की देवदक्षिणा यज्ञ भगवान को समर्पित की। वंदनाबाई सरप ने कार्यक्रम का आयोजन किया। यज्ञ संचालन श्री गजानन दैय्या की टोली ने किया।

लखनऊ शाखा द्वारा विद्यालयों में अनवरत हो रही हैं कार्यशालाएँ

हरदोई। उत्तर प्रदेश

डाल सिंह मेमोरियल स्कूल, मंगलीपुरवा फाटक, हरदोई में दिनांक 21 दिसम्बर 2023 को व्यक्तित्व विकास व व्यसनमुक्ति कार्यशाला का आयोजन हुआ। दो सत्रों में आयोजित इस कार्यक्रम से लगभग 225 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। उल्लेखनीय है कि गायत्री परिवार आलमबाग लखनऊ ने 'आओ बनाएँ व्यसनमुक्त भारत' अभियान के अंतर्गत विद्यालयों में इस प्रकार की कार्यशालाओं के आयोजन का नियमित क्रम चला रखा है।

मुख्य वक्ता श्री अरुण श्रीवास्तव और उनके साथी महापुरुषों की जीवनी, पौराणिक कथानक, चुटीले उद्धरण, रोचक संस्मरण के साथ बच्चों के व्यक्तित्व विकास के बहुमूल्य सूत्र और व्यसनों से दूर रहने की प्रेरणा देते हैं और संकल्प कराते हैं।

आलमबाग शाखा ने इस प्रेरक कार्यशाला के आयोजन लिए डाल सिंह मेमोरियल स्कूल के प्रबंधक श्री अखिलेश सिंह तथा सी.एस. एकेडेमी के प्रबंधक श्री कमलेश सिंह को युगऋषि का वाङ्मय एवं स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया।

थनौद, दुर्ग। छत्तीसगढ़

गायत्री परिवार के युवा संगठन 'दिया छत्तीसगढ़' द्वारा एनएसएस शिविर हायर सेकेंडरी स्कूल थनौद में 24 दिसम्बर को व्यक्तित्व विकास एवं व्यसनमुक्ति कार्यशाला का आयोजन किया गया। दिया के संयोजक डॉ. पी.एल. साव जी ने इसे संबोधित करते हुए कहा कि जीवन की छोटी-छोटी बुराइयों को दूर कर एवं महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर जीवन को महान बनाया जा सकता है। उन्होंने कहा कि नशा व्यक्तित्व विकास की राह में बड़ी बाधा है। डॉ. योगेंद्र साहू ने संकल्प शक्ति को सफलता की जननी बताया और वर्तमान संकल्प बल के आधार पर बुराइयों से बचने तथा जीवन को श्रेष्ठता की ओर अग्रसर करने की प्रेरणा दी। कार्यशाला के संचालन में श्रीमती अनीता साव, इं. युगल किशोर साहू एवं विद्यालय परिवार के शिक्षक प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

कार्यकर्त्ता गोष्ठी एवं विशाल व्यसन मुक्ति रैली

नारायणपुर। छत्तीसगढ़

गायत्री शक्ति पीठ नारायणपुर में दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय कार्यकर्ता गोष्ठी का आयोजन दिनांक 9 एवं 10 दिसम्बर को किया गया। जिसमें 150 से भी अधिक कार्यकताओं ने भाग लिया। इस गोष्ठी में 'विजन-2026' पर चर्चा हुई। प्रांतीय प्रतिनिधि श्री चम्पेश्वर साहू जी ने माताजी की जन्म शताब्दी 2026 तक नारायणपुर जिले के हर गाँव तक मिशन का विस्तार करने की प्रेरणा दी। दो दिनों तक विविध आन्दोलन और कार्ययोजनाओं पर चर्चा हुई।

अंतिम दिन विशाल व्यसन मुक्ति रैली का भी आयोजन हुआ। नारायणपुर नक्सल प्रभावित क्षेत्र होते हुए भी बड़ी संख्या में

कार्यकर्त्ताओं की उपस्थिति उत्साहवर्धक थी। जीवन में परम पूज्य गुरुदेव का स्नेहाशीष मिलने से सभी बहुत गौरवान्वित थे। सभी ने उनके विचारों को घर-घर पहुँचाने का उत्साह दर्शाया।

101 जोड़ों का विवाह

वाराणसी। उत्तर प्रदेश

15 दिसम्बर को विकास खण्ड कार्यालय पिंडरा(मंगारी), वाराणसी के प्रांगण में मुख्यमंत्री सामूहिक आदर्श विवाह समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें गायत्री शक्तिपीठ दानुपुर, वाराणसी के आचार्यों ने 101 जोड़ों का अत्यंत प्रेरणादायी पाणिग्रहण संस्कार सम्पन्न कराया। पं. गंगाधर उपाध्याय ने नव दम्पतियों को विवाह दिवस पर वृक्षारोपण करने और पूर्णतः नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणाएँ दीं एवं संकल्प कराए।

कार्यक्रम में माननीय डॉ. अवधेश सिंह, विधायक पिंडरा, माननीय श्री त्रिभुवन राम, विधायक अजगरा उपस्थित रहे। नव दम्पतियों को परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा लिखित साहित्य भी भेंट किया गया।

व्यसनमुक्ति रैली और नुक्कड़ नाटकों का मंचन

ग्रेटर नोएडा। एन.सी.आर.

'दिया' ग्रेटर नोएडा ने 17 दिसंबर को कई सेक्टर्स में व्यसनमुक्ति रैली निकाली। युवा संगठन दिया ने यह कार्य कई सेक्टर्स के आर.डब्लू. के प्रेसिडेंट्स से सहयोग सम्पन्न करते हुए सैकड़ों लोगों को सत्प्रेरणाएँ प्रदान कीं।

रैली का शुभारम्भ प्रज्ञा विस्तार केंद्र, सेक्टर स्वर्ण नगरी से गायत्री मंत्रोच्चारण के साथ हुआ। यह जनजागरण यात्रा ओमिक्रोन-3, मयूर-1, ओमिक्रोन-2 की गलियों से गुजरते हुए लोगों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करती रही। दर्शकों में परम पूज्य गुरुदेव के द्वारा लिखित 'छात्र वर्ग में नशे की दुष्प्रवृतियाँ' पुस्तक निःशुल्क वितरित की गई।

इसके बाद प्रज्ञा विस्तार केंद्र पर भजन संध्या 'एक शाम-गुरुवर के नाम' का आयोजन किया गया। यह

दिया, ग्रेटर नोएडा द्वारा निकाली गई रैली और नुक्कड़ नाटक

पूरी तरह नशामुक्ति पर केन्द्रित था, जिसमें सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। डॉक्यूमेंट्री और नुक्कड़ नाटक के माध्यम से नशामुक्ति की प्रेरणाएँ दी गईं। गायत्री चेतना केंद्र के व्यवस्थापक श्री बालरूप शर्मा ने दर्शकों को नशा नहीं करने का संकल्प दिलाया। इसके अलावा गौतम बुद्ध नगर क्षेत्र में अपना पूरा जीवन मिशन के लिए समर्पित कर चुके श्री घूरेलाल शर्मा, श्री किशोर यादव, श्री केशरी सिंह और श्री देवदत्त को प्रशस्ति पत्र और सम्मान चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

दिया की बहुमुखी सक्रियता

दिया ग्रेटर नोएडा के समन्वयक श्री नीटू राघव ने बताया कि उनकी शाखा नशा उन्मूलन, माता भगवती बाल संस्कार शाला तथा गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए अथक प्रयास कर रही है। उनके द्वारा अलग-अलग सेक्टर्स में साहित्य स्टॉल लगाए जा रहे हैं, समाज के अंदर फैली बुराइयों के बारे में नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से जागरूकता बढ़ाई जा रही है। प्राइवेट सेक्टर में वर्कशॉप और प्रत्येक रविवार को केंद्र पर योग-ध्यान के साथ अलग-अलग विषयों पर मार्गदर्शन व जनजागरण किया जा रहा है।

39 गर्भवती बहिनों ने पुंसवन संस्कार कराया

अलीराजपुर। मध्य प्रदेश

मातृशक्ति जन्म शताब्दी 2026 को लक्ष्य कर चलाए जा रहे श्रद्धा संवर्धन अभियान के अंतर्गत ग्राम देहदला में पाँच कुंडीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में 39 गर्भवती बहिनों ने परम पूज्य गुरुदेव द्वारा चलाई जा रही संस्कार परम्परा के प्रति आस्था व्यक्त करते हुए पुंसवन संस्कार कराया। महिला मंडल की प्रमुख केसर राठौर ने संस्कार

ग्राम देहदला में पुंसवन संस्कार कराने वाली बहिनें

की महत्ता और गर्भस्थ शिशु के स्वस्थ विकास के लिए आहार-विहार संबंधी आदर्श दिनचर्या की विस्तार से जानकारी दी। यज्ञ एवं संस्कार का संचालन महिला मंडल की पुष्पा राठौड़, सरोज राठौर, प्रेमलता चौहान, सारिका सक्सेना ने किया।

आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

अनुभवी चिकित्सक व नर्स की आवश्यकता है

DOCTOR

अपने लाखों सेवाभावी भावनाशील परिजनों के सहयोग से गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज पीड़ित मानवता की सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। इसी क्रम में शान्तिकुञ्ज में एक हॉस्पिटल 'आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय' भी मानवता की निःशुल्क सेवा में समर्पित है। बड़ी संख्या में शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता, शिविर में आने वाले परिजन तथा हरिद्वार शहर व आसपास के क्षेत्र के लोग इसका लाभ ले रहे हैं।

इन दिनों आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में 1. आयुर्वेदिक (BAMS अथवा MD), 2. एलोपैथिक (MBBS अथवा MD) चिकित्सक तथा 3. स्टाफ नर्स (GNM) की आवश्यकता है। जो परिजन शान्तिकुञ्ज में रहकर समयदान करते हुए अथवा ब्राह्मणोचित मानदेय लेकर सेवाएँ प्रदान कर सकते हैं, वे कृपया अविलम्ब अपना आवेदन भेज दें।

कृपया अपनी समग्र जानकारी (आयु, योग्यता, अनुभव आदि सहित) ई-मेल : hospital@awgp.org पर अथवा व्हॉट्सएप- 9258369516 पर भेज दें। यदि कोई और जानकारी की आवश्यकता हो तो इसी मोबाइल पर सम्पर्क किया जा सकता है।

नोट : कृपया 60 वर्ष से कम आयु वाले स्वस्थ चिकित्सक ही आवेदन करें।

उत्तर प्रदेश का प्रान्तीय कन्या कौशल शिविर

50 जिलों से आई 8000 कन्याओं ने प्रशिक्षण लिया

गायत्री परिवार द्वारा नारियों के उत्थान के लिए चलाया जा रहा अभियान पूरे विश्व में एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है।
- आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

सुलतानपुर में सम्पन्न प्रान्तीय कन्या कौशल शिविर को सम्बोधित करते डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

सुलतानपुर। उत्तर प्रदेश

उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल में पाँच दिवसीय प्रांतीय कन्या कौशल प्रशिक्षण शिविर का विशाल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। पूरे प्रदेश के लगभग 50 जिलों से आयी 8000 से ज्यादा कन्याओं ने इसमें भाग लिया। व्यक्तित्व निर्माण, नारी स्वास्थ्य, बाल संस्कार शाला, माँ की पाठशाला, आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी, आओ बनाएँ व्यसनमुक्त भारत आदि आन्दोलनों को समय की माँग के अनुरूप पूरे प्रदेश में तीव्र से तीव्रतम गति देने के लिए यह शिविर आयोजित किया गया था।

इस शिविर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 16 दिसंबर 2023 को आगमन आह्लादकारी था। गायत्री परिवार के परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया। दीपयज्ञ के अवसर पर उन्होंने राष्ट्र की दुर्गा शक्ति में नई चेतना जगाते हुए कहा कि परम वंदनीया माताजी के संरक्षण में एवं श्रद्धेया शैल जीजी के कुशल नेतृत्व में गायत्री परिवार द्वारा नारियों के उत्थान के लिए चलाया जा रहा अभियान पूरे विश्व में एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा है। युग निर्माण योजना के विस्तार में और सनातन देव संस्कृति के उत्थान में नारियों की विशेष भूमिका है।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश सरकार में राज्य मंत्री आदरणीय श्री आशीष पटेल एवं शहर के विभिन्न वर्गों से आए अनेक गणमान्य उपस्थित थे। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सभी को पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया। उन्होंने सुलतानपुर की कलेक्टर कृतिका ज्योत्सना जी से भी भेंट की और उन्हें युगऋषि के क्रान्तिकारी साहित्य का उपहार दिया।

17 दिसंबर को डॉ. चिन्मय जी ने कहा कि पूरे विश्व की निगाह भारत पर है और भारत का भविष्य देश की देवियों के हाथों में सुरक्षित है। हमें अपने नैतिक दायित्वों को पूरा करने में कोई कोर-कसर नहीं रखनी चाहिए।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष तक सवा लाख कन्याओं को नारी जागरण अभियान से जोड़ने का संकल्प लेने वाली उत्तर प्रदेश एवं खंडवा मध्य प्रदेश से आई कन्याओं का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि शिविर में आई हर बेटी परिवार एवं समाज के नव निर्माण में अग्रणी भूमिका निभायेगी। उन्होंने सभी बेटियों को उनके सामर्थ्य और संकल्प शक्ति से परिचय कराते हुए नई जिम्मेदारियाँ उठाने का आह्वान किया।

आद. डॉ. चिन्मय जी ने युवा प्रकोष्ठ सुलतानपुर की सक्रियता की सराहना की और उसके संचालकों को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। यह कार्यक्रम शान्तिकुञ्ज से आई ब्रह्मवादिनी बहिनों के द्वारा संचालित था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के प्रमुख प्रतिनिधियों का अभिनंदन

सवा लाख कन्याओं को जोड़ने का लक्ष्य

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सवा लाख कन्याओं को नारी जागरण अभियान से जोड़ने के अभियान में जुटी खण्डवा (म.प्र.) और उत्तर प्रदेश से आई कन्याओं के पुरुषार्थ की सराहना की।

व्यसनमुक्त भारत अभियान में अग्रणी भूमिका निभा सकती हैं देवियाँ

इस शिविर में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने वर्तमान में नशे की राष्ट्रव्यापी समस्या पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि मातृशक्ति में इस बुराई से लड़ने की अकूत सामर्थ्य है। उन्होंने उपस्थित नारी शक्ति को व्यसनमुक्त भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने का संकल्प भी दिलाया।

मंत्री महोदय पधारे

आदरणीय श्री आशीष पटेल, राज्य मंत्री उत्तर प्रदेश सरकार सहित अनेक गणमान्यों ने भाग लिया।

108 कुंडीय नारी सशक्तीकरण गायत्री महायज्ञ

एक महान आध्यात्मिक क्रान्ति कर रही हैं भारत की नारियाँ - आदरणीया शेफाली जीजी

आदरणीया शेफाली जीजी के नेतृत्व में यज्ञ संचालन कर रही शान्तिकुञ्ज की टोली

एटा। उत्तर प्रदेश

एटा में 22 से 25 दिसंबर 2023 की तिथियों में आयोजित 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ मुख्य रूप से नारी सशक्तीकरण के लिए समर्पित रहा। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्रीमती शकुंतला साहू, श्रीमती संगीता राठौर, श्रीमती नीरू गौतम, श्रीमती कौशल्या यादव, श्रीमती राधा ध्रुव एवं श्रीमती नीलम शास्त्री की टोली ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बड़े प्रभावी ढंग से नारी उत्कर्ष से जुड़े विषयों को उकेरा।

24 दिसम्बर को शान्तिकुञ्ज की विशेष प्रतिनिधि आदरणीया शेफाली जीजी का आगमन हुआ। परिजनों ने साफा, तिलक, दुपट्टा और माल्यार्पण कर उनका स्वागत अभिनंदन किया। दीपयज्ञ के अवसर पर खचाखच भरे पंडाल में एटा, मैनपुरी, आगरा, ऑंवलखेड़ा, कासगंज, अयोध्या से आए हजारों परिजनों को उन्होंने संबोधित किया। इस अवसर पर स्थानीय विधायक एवं नगर परिषद अध्यक्षा सुधा गुप्ता आदि गणमान्य उपस्थित थे।

आदरणीया शेफाली जीजी ने परम पूज्य गुरुदेव के उद्घोष 'इक्कीसवीं सदी, नारी सदी' का स्मरण कराते हुए यह विश्वास दिलाया कि इस सदी में भारत सुपर पावर बनेगा और इसमें नारी शक्ति की अग्रणी भूमिका होगी। उन्होंने कहा कि भारत की नारियाँ एक महान आध्यात्मिक क्रान्ति कर रही हैं।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में विविध संस्कार हुए। सर्वश्री वीरेंद्र सिंह तोमर, अवनीश तोमर, विशनपाल सिंह चौहान पत्रकार, सुरेंद्र चौहान, पुष्पेंद्र चौहान, संजय चौहान मीडिया प्रभारी, सरला पुंडीर, सरला चौहान, राधा रानी पुंढीर, रजनी चौहान, सत्यदेव उपाध्याय, शिवप्रसाद पचोरी, राम शरण शर्मा, हरिओम श्रीवास्तव, राधेश्याम श्रीवास्तव सहित हजारों महिला-पुरुष उपस्थित प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

कन्या कौशल शिविर में हुआ अभिनव प्रयोग

बेटियाँ अपने जन्मदिन पर पिता, भाई एवं परिवारी जनों से माँगें नशा छोड़ने के संकल्प का उपहार

महाविद्यालय की बालिकाओं में नव उल्लास जगाती गायत्री परिवार की प्रेरणाएँ

देवास। मध्य प्रदेश

देवास शाखा ने महारानी पुष्पमाला राजे पंवार शासकीय कन्या महाविद्यालय में कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया। जिला युवा समन्वयक प्रमोद निहाले, सरिता पाटीदार, नीति श्रीवास्तव एवं लता खंडेलवाल ने इसे संबोधित करते हुए बालिकाओं का कौशल निखारने के साथ उनका आत्मविश्वास और सामाजिक कार्यों में भागीदारी का उत्साह बढ़ाने के महत्त्वपूर्ण सूत्र दिये।

सुश्री सरिता पाटीदार और नीति श्रीवास्तव ने कहा कि बेटियाँ समाज की धुरी हैं। उनमें सभ्य परिवार, समाज और राष्ट्र के निर्माण की अकूत सामर्थ्य है। उन्होंने कहा कि नियमित गायत्री मंत्र की उपासना इस आत्मविश्वास को जगाती है और आंतरिक सामर्थ्य को निरंतर बढ़ाते हुए गुणवान बनाती है।

गायत्री महामंत्र की उपासना से उभरेगा चमत्कारिक चुंबकत्व
- सुश्री सरिता पाटीदार

श्री प्रमोद निहाले ने एक अभिनव प्रयोग के तौर पर बेटियों से अपने पिता और भाइयों का नशा छुड़ाने और उनका जीवन बेहतर बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि वे दृढ़ विश्वास के साथ गायत्री उपासना करती हैं, परम पूज्य गुरुदेव के विचारों के सान्निध्य में रहती हैं तो उनमें यह चमत्कारिक सामर्थ्य विकसित हो जाएगी कि अपने पिता और भाइयों का नशा छुड़ा सकें। उन्होंने कहा कि अपने जन्मदिन पर बेटियों को उपहार के रूप में पिता, भाई एवं घर के अन्य लोगों से नशा छोड़ने का संकल्प माँगना चाहिए।

शिविर का शुभारंभ महाविद्यालय के प्राचार्य भारत सिंह गोयल ने दीप जलाकर और देवपूजन कर किया। बालिकाओं को अनावश्यक फैशन से बचने की प्रेरणा भी दी गई।

केरल में आयोजित हो रहे हैं कन्या/किशोर-कौशल शिविर

एर्नाकुलम। केरल : गायत्री चेतना केन्द्र कोच्ची-एर्नाकुलम में 10 दिसम्बर 2023 को किशोर-कौशल शिविर संपन्न हुआ। केरल राज्य में आयोजित इस प्रथम कन्या-किशोर कौशल शिविर में 11 से 21 वर्ष के बालकों एवं तरुणों ने भाग लिया।

यह शिविर बच्चों के व्यक्तित्व विकास एवं स्वास्थ्य संरक्षण पर केन्द्रित रहा। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश कुमार शर्मा, श्री शिवलाल पाटीदार, श्री गोपाल शर्मा, श्री अशोक अग्रवाल आदि ने किशोरों के जीवन के महत्त्वपूर्ण विषयों पर पावर पॉइंट के सहारे मार्गदर्शन किया। बच्चों में गायत्री उपासना और जीवन साधना से आत्म विश्वास बढ़ाने और जीवन में बड़ी सफलताएँ प्राप्त करने का उत्साह जगाया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय की विशिष्ट शिक्षा प्रणाली का लाभ लेने की प्रेरणा दी गई।

सत्र समापन पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने समस्त किशोरों को गायत्री मंत्र शॉल उढ़ाकर पुरस्कृत एवं प्रोत्साहित किया। उन्हें विद्यार्थी जीवन से जुड़ी पुस्तकों का सेट 'वंदे वेदमातरम्' और युग निर्माण सत्संकल्प पाठ, गायत्री मंत्र भावार्थ स्टीकर, सद्वाक्य स्टीकर, गायत्री मंत्र लेखन शीट, अखण्ड ज्योति पत्रिका आदि भेंट किए गए।

एर्नाकुलम में आयोजित शिविर के प्रशिक्षकगण एवं उसमें भाग लेने वाली कन्याएँ

तिरुवनंतपुरम में

17 दिसंबर 2023 को ऐसा ही एक कन्या कौशल शिविर तिरुवनंतपुरम में ग्लोबल श्रीऋषि सत्संगम नेमम में संपन्न हुआ। डॉ. ऋषि सागर के सहयोग से संपन्न इस शिविर में बालिकाओं के साथ उनके अभिभावकों ने भी भाग लिया। सागर जी की 80 वर्षीया माता श्रीमती वी. शांता कुमारी और शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा ने दीप प्रज्वलन कर सत्र का शुभारम्भ किया।

राजस्थान में बहुत लोकप्रिय है कन्या कौशल शिविरों की शृंखला

इन दिनों राजस्थान में कन्या कौशल शिविरों की शानदार शृंखला चल रही है। विद्यालयों में हो या शक्तिपीठों पर अपने कार्यकर्त्ताओं के बीच, सभी जगह लोगों में बालिकाओं में नवउल्लास का संचार करने वाले इन शिविरों को आगे भी जारी रखने अथवा इनके आयोजन के लिए प्रशिक्षण प्राप्त करने का उत्साह दिखाई दे रहा है।

काछोला : 28 नवम्बर गायत्री शक्तिपीठ काछोला, जिला भीलवाड़ा के सहयोग से राजकीय उ.मा. विद्यालय, काछोला में कन्या किशोर कौशल शिविर सम्पन्न हुआ। श्रीमती सरोजना व्यास एवं सत्यनारायण व्यास ने छात्राओं को संबोधित किया।

उदयपुर : उदयपुर में 29 एवं 30 नवम्बर को चार शिविर सम्पन्न हुए। एसएस कॉलेज ऑफ एज्युकेशन, उमरड़ा की 100 छात्राओं ने प्रशिक्षण लिया। कॉलेज की प्राचार्या पूर्णिमा नारनिया जी गायत्री परिवार की गतिविधियों से जुड़े रहने के लिए उत्साहित हुईं।

राजस्थान महिला विद्यालय और बी.एड. कॉलेज उदयपुर की 400 छात्राएँ शिविर में शामिल हुईं। गायत्री शक्तिपीठ पर सम्पन्न कार्यक्रम में 200 कन्याओं की उपस्थिति रही। ये कन्याएँ इतनी भावविभोर थीं कि शिविर समापन के लिए तैयार ही नहीं थीं।

ग्रामीण आदिवासी स्कूल एवं छात्रावास में आयोजित शिविर में 150 कन्याओं की भागीदारी रही।

आगे पृष्ठ 7 पर पढ़ें ....

राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञों में आस्था का सैलाब

51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा

रायपुर। छत्तीसगढ़
दिनांक 15 से 18 दिसम्बर 2023 की तिथियों में दशहरा मैदान, छत्तीसगढ़ नगर, टिकरापारा रायपुर में 51 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण का भव्य आयोजन सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम संयोजक श्री रामकृष्ण साहू एवं जिला समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद ने बताया कि प्रथम दिन की कलशयात्रा में लगभग 2000 गायत्री परिजन एवं नगरवासियों ने भाग लिया। गायत्री माता के जयकारों से पूरा नगर गूंजायमान रहा।

शान्तिकुञ्ज से कार्यक्रम सम्पन्न कराने पहुँची श्री योगेश पटेल की टोली ने दैनिक प्रज्ञापुराण कथा में वर्तमान युग की अनेक समस्याओं की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज व्यक्ति स्वार्थ में डूबा हुआ है और केवल अपने हित की सोचता है, इसी कारण ज्यादा दुःखी है। उन्होंने पूज्य गुरुदेव के साहित्य का नियमित अध्ययन करते हुए परस्पर प्रेम एवं सद्भावना के विस्तार की प्रेरणाएँ दीं।

यज्ञ स्थल में साहित्य और सप्त आन्दोलन प्रदर्शनी श्रद्धालुओं के आकर्षण का केन्द्र रही। लोगों को स्वावलम्बन और कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण भी दिया गया।

दिया, छत्तीसगढ़ द्वारा आयोजित युवा संगोष्ठी में युवाओं का जनसैलाब उमड़ा। डॉ. पी.एल. साव ने इसे संबोधित करते हुए सभी को प्रमुख रूप से नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी और संकल्प कराए। युवा प्रकोष्ठ प्रभारी रायपुर आशीष राय ने बताया कि छोटे छोटे बच्चे भी आज नशे के गिरफ्त में आ रहे हैं, इस हेतु गायत्री परिवार की युवा टीम के द्वारा अपने-अपने क्षेत्र के विद्यालय में जाकर बच्चों को वीडियो प्रेजेंटेशन के माध्यम से जागरूक करवाते हुए व्यसनमुक्त करवाया जाएगा।

कलश यात्रा में झलकता बहिनों का उत्साह और दीक्षा लेते भाई, बहिन व बच्चे

146 लोगों ने दीक्षा ली

दीपयज्ञ के समय दशहरा मैदान ग्यारह हजार दियों से जगमगा रहा था, जिसकी दिव्यता हर श्रोता के हृदय में प्रतिबिंबित होती रही।

महायज्ञ के दौरान 146 लोगों का गुरुदीक्षा, 28 गर्भवती महिलाओं का पुंसवन, 09 शिशुओं के नामकरण, 10 बच्चों का अन्नप्राशन, 08 बच्चों का मुंडन, 85 बच्चों का विद्यारम्भ, 15 युवाओं का यज्ञोपवीत एवं 22 लोगों का जन्मदिवस संस्कार करवाया गया।

इस कार्यक्रम में गणमान्यों ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ भाग लिया। पूर्व विधायक श्री धनेन्द्र साहू, रायपुर दक्षिण विधायक श्री बृजमोहन अग्रवाल, स्थानीय पार्षद श्रीमती निशा देवेंद्र यादव तथा अनेक जनप्रतिनिधि, अधिकारीगणों ने गायत्री महामंत्र की आहुतियों के साथ विश्व कल्याण की प्रार्थना की। गायत्री परिवार छत्तीसगढ़ की जोन समन्वयक श्रीमती आदर्श वर्मा, उपजोन समन्वयक श्री सी.पी. साहू, गायत्री शक्ति पीठ समता कॉलोनी रायपुर के प्रमुख ट्रस्टी श्री श्याम बैस भी उपस्थित रहे।

वायनाड में गायत्री ज्ञान मंदिर स्थापना आश्रम निर्माण का संकल्प भी हुआ

वायनाड। केरल
प्रखर गायत्री उपासक डॉ. शिवप्रसाद जी एवं डॉ. सती देवी के स्वगृह पूथीरूवथिरा हाउस, वलिपेट्टा, वायनाड में मलयालम भाषा में उपलब्ध परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के साहित्य की स्थापना की गई। इस अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उमेश शर्मा जी, श्री शिवलाल पाटीदार जी, श्री गोपाल शर्मा जी ने संकल्प संगोष्ठी दीपयज्ञ वैदिक मन्त्रोच्चारण के साथ स्वस्तिवाचन करते हुए वायनाड में गायत्री आश्रम के निर्माण का संकल्प कराया।

वायनाड में गायत्री ज्ञान मंदिर स्थापना के उत्साहवर्धक क्षण

डॉ. शिवप्रसाद जी ने सन् 2019 में एक लाख चालीस हजार गायत्री महामंत्र जप किया था। इसकी पूर्णाहुति के अवसर पर उनके मन में गायत्री आश्रम बनाने का संकल्प उभरा था। तभी से वे निरंतर शान्तिकुञ्ज के संपर्क में थे। 19 दिसम्बर 2023 को उनके घर प्रज्ञा संगोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें उनके मित्र, पड़ोसी, सहयोगी, साथी, ग्रामवासी सभी ने मिलकर इस भागवत कार्य को करने का संकल्प लिया। कन्नूर जिले में गायत्री समिति के अध्यक्ष डॉ. नारायण पुडुचेरी जी की विशेष उपस्थिति रही।

मातृशक्ति जन्मशताब्दी शक्ति कलश यात्रा

खरगोन। मध्य प्रदेश
खरगोन जिले ने जिला स्तरीय कार्यकर्त्ता संगोष्ठी का आयोजन कर जिले में अखण्ड दीप एवं मातृशक्ति जन्मशताब्दी की तैयारी कर ली है। गायत्री शक्तिपीठ खरगोन पर आयोजित इस संगोष्ठी में मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री लक्ष्मण पटेल ने जिले में निकलने वाली पाँच यात्राओं के प्रभारियों को शक्ति कलश सौंपे।

उपजोन प्रभारी श्री पन्नालाल बिरला ने बताया कि इन पाँच यात्राओं के माध्यम से जिले की प्रत्येक तहसील के प्रत्येक पंचायत में विचार क्रान्ति अभियान चलाया जाएगा। प्रत्येक पंचायत में पौधा रोपण, सत्साहित्य की स्थापना, व्यसन मुक्त और प्लास्टिक मुक्त गाँव बनाने की प्रेरणा दी जाएगी और संकल्प कराए जायेंगे।

श्री माधव पाटीदार ने कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण में टोली के अनुशासन समझाये। जिला समन्वयक जोगीलाल मुजाल्दे ने सभी गायत्री परिजनों से यात्रा को सफल बनाने में बढ़चढ़कर भागीदारी करने का आह्वान किया।

आदर्श ग्राम निर्माण के सूत्र बताए

अभनपुर, रायपुर। छत्तीसगढ़
अभनपुर ब्लॉक के ग्राम खोरपा में 23 से 26 दिसम्बर की तिथियों में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण का आयोजन हुआ, जिसमें सैंकड़ो लोगों ने गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, सूर्य मंत्र एवं नवग्रह मंत्र के साथ हवन कुण्ड में श्रद्धापूर्वक आहुतियाँ समर्पित की। शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री योगेश पटेल की टोली ने प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से गाँवों के उत्थान के सूत्रों की चर्चा की। उन्होंने समाज की भौतिक प्रगति के साथ आध्यात्मिक उन्नति की ओर ध्यान देने का आह्वान किया। उन्होंने गाँवों को संस्कार युक्त, व्यसन मुक्त, शिक्षित, स्वस्थ, स्वच्छ, स्वावलंबी बनाने के लिए परस्पर सहयोग व सहकार बढ़ाने पर बल दिया। अपनी सनातन परम्परा के अनुरूप गाँव में 'ऋषि-कृषि' की संस्कृति को बढ़ावा देने और कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण तंत्र स्थापित करने की चर्चाएँ हुईं।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने गायत्री उपासना से व्यक्तित्व के परिष्कार और संस्कारों की परम्परा के पुनर्जीवन पर विशेष बल दिया।

प्रज्ञापुराण के पश्चात 22 जनवरी को अयोध्या में होने वाले राम मंदिर की प्राणप्रतिष्ठा के निमित्त 2100 दीयों से दीपयज्ञ किया गया। इस अवसर पर अभनपुर के विधायक श्री इंद्रकुमार साहू, समाजसेवक श्री प्रभात मिश्रा, ग्राम खोरपा की सरपंच श्रीमती रेखा बघेल, उपसरंपच राम सिंह साहू सहित गायत्री परिवार जिला रायपुर के समन्वयक श्री लच्छूराम निषाद सहित अनेक गायत्री परिजन उपस्थित रहे।

एक मासीय परिव्रज्या पर पहुँचीं देसंविवि की छात्राएँ

युवा दिव्य जागरण कार्यशाला

देवास। मध्य प्रदेश
देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुञ्ज के अनिवार्य परिवीक्षा कार्यक्रम के अंतर्गत विवि की छात्राएँ खुशबू दोसानी, रीतिका सेन एवं स्नेहा तोमर देवास पहुँची। गायत्री शक्तिपीठ एवं गायत्री प्रज्ञापीठ पर उनका स्वागत हुआ। मीडिया प्रभारी विक्रमसिंह चौधरी ने बताया कि हर वर्ष विवि की परिवीक्षाधीन छात्राओं के कार्यक्रम जिले की हर तहसील में आयोजित किए जाते हैं। उनकी दक्षता और उत्साह से हजारों लोग प्रभावित होते रहे हैं। उन्होंने कहा कि इन छात्राओं के एकमासीय प्रवास का भी भरपूर उपयोग किया जाएगा।

कार्यक्रम शृंखला का शुभारंभ हिमालय एकेडमी एवं महारानी राधाबाई हायर सेकेंडरी स्कूल से हुआ। दोनों विद्यालयों में सैकड़ों बच्चों को योग, स्वास्थ्य, सोशल नेटवर्किंग, सामाजिक दायित्व आदि के प्रति जागरूक किया। कार्यक्रम की सफलता में स्थानीय वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री प्रमोद निहाले, श्री रमेशचंद्र मोदी आदि भी इन कार्यक्रमों को उपलब्धिपूर्ण बनाने के लिए प्रशंसनीय योगदान दे रहे हैं।

महाराष्ट्र और गोवा के अनेक जिलों में हुआ देव संस्कृति दिग्विजय अभियान का भव्य स्वागत

अश्वमेध महायज्ञ मुंबई 2024 के माध्यम से पूरे महाराष्ट्र में चलाया जा रहा देव संस्कृति दिग्विजय अभियान अत्यंत लोकप्रिय सिद्ध हुआ है। जहाँ-जहाँ से यह गुजर रहा है, लोग बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ शक्ति कलश का पूजन करते हुए अपने श्रद्धा सुमन समर्पित कर रहे हैं। अश्वमेध महायज्ञ मुंबई की कलश यात्रा ने नागपुर और पुणे जोन के अनेक जिलों का भ्रमण किया। यह यात्रा गोवा राज्य में भी पहुँची। हर नगर के गणमान्यों, प्रसिद्ध देवालयों, तीर्थ स्थलों तक युगऋषि का संदेश पहुँचाया, देव संस्कृति दिग्विजय अभियान में भागीदारी तथा अश्वमेध महायज्ञ का आमंत्रण पहुँचाया।

पुणे जोन के परळी-वैद्यनाथ अंबेजोगाई मंदिर के प्रांगण में दीप यज्ञ संपन्न हुआ। सैकड़ों लोगों ने इसमें भागदारी की। लातूर एवं उस्मानाबाद जिले का मंथन करते हुए अश्वमेध का रथ तुलजापुर भवानी मंदिर पहुँचा, जहाँ कलश का बड़ी श्रद्धा के साथ पूजन हुआ।

विठ्ठल भगवान की पुण्य नगरी पंढरपुर में शक्ति कलश पूजन के साथ दीप यज्ञ संपन्न हुआ। सांगली में पटेल समाज के अध्यक्ष तथा शहर के गणमान्य व्यक्तियों द्वारा दीप यज्ञ के साथ पूजन किया गया। श्री दत्तात्रेय भगवान की

तपःस्थली नरसोवाबाडी में भी शक्तिकलश पहुँचा। कोल्हापुर के सुप्रसिद्ध महालक्ष्मी मंदिर के प्रमुख पुजारी द्वारा पूजन किया गया। शक्तिकलश इचलकरंजी होते हुए गोवा पहुँचा।

गोवा पहुँचा अश्वमेध यज्ञ का शक्ति कलश

गोवा में मापुसा शहर के श्री देव बोडगेश्वर संस्थान के प्रमुख ट्रस्टी श्री आनंद भैदकर जी एवं शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री वीरेन्द्र तिवारी ने शक्ति कलश का पूजन कर अश्वमेध यज्ञ आयोजन के प्रति अपनी सद्भावनाएँ व्यक्त कीं। गोवा राज्य के समन्वयक श्री श्याम लाल मौर्या के विशेष प्रयासों से पोंडा के श्री गणेश मंदिर में दीप यज्ञ सम्पन्न हुआ, जिसमें 200 परिजनों ने भाग लिया। वालपई शहर में श्रीराम गौ संवर्धन केन्द्र के प्रमुख श्री हनुमंत परब, श्री लक्ष्मण जोशी एवं गोवा राज्य के मुख्यमंत्री श्री प्रमोद सावंत जी के पिता श्री के करकमलों द्वारा कलश पूजन संपन्न हुआ।

महाराष्ट्र के सिंधुदुर्ग जिले के झरप में श्री राऊल महाराज मठ कुडाळ के कुडाळेश्वर मंदिर में कलशपूजन हुआ, तत्पश्चात् स्वामी नरेन्द्राचार्य महाराज के आश्रम नानिज धाम में कलशपूजन व दीप यज्ञ संपन्न हुआ। रत्नागिरी जिले के श्री क्षेत्र गणपति पुणे में समुद्र तट पर कलश पूजन व दीपयज्ञ का कार्यक्रम रखा गया था। चिपलून में समर्थ गुरु रामदास स्वामी के समाधि स्थल सज्जनगढ़ में सैकड़ों लोगों ने शक्ति कलश पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

मंगल कलश यात्रा के माध्यम से लाखों लोगों तक अश्वमेध यज्ञ का संदेश और आमंत्रण पहुँचाने में कलश यात्रा समन्वयक श्री शिवदास घावडे एवं श्री प्रताप पटैरिया के साथ सैकड़ों निष्ठावान कार्यकर्त्ता एवं शान्तिकुञ्ज की टोली के श्री गणेश चांदवंशी, हेमंत जी, नीरज जी पूरी निष्ठा और तन्मयता के साथ सक्रिय रहे।

पूरे जिले में करेंगी युगचेतना का विस्तार

लखनऊ। उत्तर प्रदेश
10 दिसम्बर को गायत्री परिवार आलमबाग लखनऊ द्वारा उत्तर प्रदेश सरकार के उद्यमिता विकास संस्थान, सरोजनी नगर, लखनऊ के सुसज्जित ऑडिटोरियम में छठवीं युवा दिव्य जागरण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 200 युवाओं ने भाग लिया।

बाबा साहब भीमराव अंबेडकर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के भौतिक विज्ञान विभाग के डीन प्रोफेसर बी.सी. यादव, डॉ. प्रवीण सिंह 'दीपक' व फिरोज गाँधी पोस्ट ग्रेजुएट डिग्री कालेज रायबरेली में भौतिक विज्ञान विभाग की पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. श्रीमती रत्ना सरकार आदि ने विद्यार्थियों को जीवन में आध्यात्मिकता का महत्त्व समझाया।

शिव तांडव योग नृत्य, प्रज्ञायोग व्यायाम, महिषासुर मर्दिनी माँ दुर्गा जैसे कार्यक्रमों ने प्रतिभागियों को मंत्रमुग्ध कर दिया। श्री अरूण श्रीवास्तव ने मंत्र/यज्ञ विज्ञान और 'आओ बनाएँ व्यसन मुक्त भारत' से जुड़ने की प्रेरणाएँ दीं। सभी प्रतिभागियों को सहभागिता प्रमाणपत्र एवं युग साहित्य भेंट किया गया।

गाँव-गाँव जन्मशताब्दी वर्ष का प्रयाज

शाहजहाँपुर। उत्तर प्रदेश
गायत्री शक्तिपीठ ब्रह्मस्थली बंडा ने ब्लॉक के गाँवों में जन्म शताब्दी वर्ष-2026 का सघन प्रयाज प्रारंभ कर दिया गया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक चिह्नित गाँव में सार्वजनिक स्थल पर यज्ञ और देव स्थापना, देव दक्षिणा का क्रम प्रारंभ किया गया है। इससे व्यसन मुक्ति अभियान और गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

महासमुद्र को देखकर जो अपने जीवन को वैसा ही विस्तृत और महान बनाये, वही सच्चा धर्मनिष्ठ है। -महात्मा बुद्ध

उत्तर प्रदेश में राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञों ने झकझोरे जाग्रत् आत्माओं के अंतर्मन

मन के दीपक को जलायें, जिससे मानव महामानव बन जाए। -आदरणीय डॉ. चिन्मय जी

कानपुर। उत्तर प्रदेश

''मानव का जन्म न जाने कितनी योनियों के सत्कर्म का फल है। उसे सार्थक करने के लिए अपने मन के दीपक को जलायें, जिससे जीवन में उजाला फैल जाये। इस उजाले से जो चेतना जन्म लेती है, वही अध्यात्म है। इससे सद्बुद्धि एवं सत्कर्म जीवन का हिस्सा बनते हैं तो मानव देवमानव बनकर समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं विसंगतियों को दूर करने के लिए अपने को खपा देता है और उज्ज्वल भविष्य की संकल्पना का हिस्सा बनता है।''

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दिनांक 15 दिसम्बर को कानपुर में आयोजित 151 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ में दीप महायज्ञ के अवसर पर यह विचार व्यक्त किए। हजारों श्रद्धालुओं से खचाखच भरे पाण्डाल एवं यज्ञशाला में बैठे हुए हजारों लोगों के साथ इस अवसर पर श्रीमती प्रतिभा शुक्ला (राज्य मंत्री उ.प्र.), श्रीमती नीलिमा कटियार (विधायक), श्री सुरेन्द्र मैथानी (विधायक), शिक्षाविद् डॉ. अंगद सिंह सहित अनेक गणमान्य उपस्थित थे।

यह राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ दिनांक 12 से 16 दिसम्बर 2023 तक कानपुर के बृजेन्द्र स्वरूप पार्क कानपुर में सम्पन्न हुआ। सप्त आन्दोलनों से सजी भव्य कलश यात्रा को विधायक श्री अरुण पाठक ने झण्डी दिखाकर रवाना किया।

आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी कार्यक्रम के अन्तर्गत 12 मुस्लिम सहित लगभग 200 बहिनों का गर्भोत्सव संस्कार सम्पन्न हुआ, जिसका संचालन श्रीमती नीरू तिवारी एवं मधु गुप्ता की टोली ने किया।

यज्ञ के अन्तिम दिन पूर्णाहुति के अवसर पर डॉ. पण्ड्या जी ने बताया कि जो समाज यज्ञमय जीवन शैली अपना लेता है, वहाँ स्वर्गीय वातावरण बन जाता है। उन्होंने उपस्थित समस्त देवात्माओं को मानवता के कल्याण के लिए परम पूज्य गुरुदेव के 'मानव में देवत्व के जागरण और धरती पर स्वर्ग के अवतरण' को साकार करने के लिए पूरी श्रद्धा और निष्ठा पूर्वक जुट जाने का आह्वान किया।

12 मुस्लिम सहित लगभग 200 बहिनों का गर्भोत्सव संस्कार सम्पन्न हुआ।

महापूर्णाहुति के अवसर पर विशिष्ट अतिथि श्री देवेन्द्र सिंह भोले (सांसद) एवं श्री सतीश निगम (पूर्व विधायक) मुख्य रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन शान्तिकुञ्ज से पहुँची श्री श्याम बिहारी दुबे जी एवं श्री ओइंद्र सिंह की टोली ने किया।

महायज्ञ की सफलता में सर्वश्री आर.सी. गुप्ता, डॉ. अमरनाथ सारस्वत, सुरेश तिवारी, लक्ष्मीनारायण कुशवाहा, आनन्द सिंह रावत, आर.बी. परमार, आर.पी. लाल, सुरेश जोशी, ओ.पी. चौहान, रामशंकर वैश, एस.पी. त्रिवेदी, डॉ. संगीता सारस्वत सहित सभी गायत्री परिजनों ने महती भूमिका निभाई।

आई.आई.टी. कानपुर में प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

कानपुर। उत्तर प्रदेश

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी ने दिनांक 15 दिसम्बर को आई.आई.टी. कानपुर में 'मानवीय उत्कर्ष' विषय पर आयोजित प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को संबोधित किया। संस्थान के 'भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र' (सेंटर फॉर इंडियन नॉलेज सिस्टम) में आयोजित इस विद्वत्सभा में आई.आई.टी. कानपुर में अनुसंधान एवं विकास के अधिष्ठाता प्रो. तरुण गुप्ता, कई विभागाध्यक्ष, प्रोफेसर सहित कानपुर विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति प्रो. सुधीर अवस्थी, भारतीय ज्ञान परस्परा केन्द्र के विभागाध्यक्ष प्रो. अर्नब भट्टाचार्य, प्रो. नचिकेता तिवारी एवं कानपुर शहर के सुप्रसिद्ध डॉक्टर्स उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. चिन्मय जी के साथ मंचासीन गणमान्यों ने दीप प्रज्वलन-देवपूजन कर किया। डॉ. चिन्मय जी ने परम पूज्य गुरुदेव, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्द जैसे महापुरुषों के जीवन प्रसंग पर प्रकाश डालते हुए सभी के अन्तर्मन को उत्साह एवं सकारात्मकता से भर दिया। अंत में उन्होंने समस्त गणमान्यों का अभिवादन पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर किया।

वाङ्मय स्थापना

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी ने 'भारतीय ज्ञान परम्परा केन्द्र, आई. आई.टी. कानपुर के पुस्तकालय' में गायत्री परिवार कानपुर द्वारा निःशुल्क भेंट किये गये सम्पूर्ण वाङ्मय और आर्ष ग्रन्थों की स्थापना की गयी।

ऐतिहासिक चरणपीठ के दर्शन

आद. डॉ. चिन्मय जी ने आई.आई. टी. कानपुर पहुँचने पर सर्वप्रथम परम पूज्य गुरुदेव द्वारा स्थापित चरण पीठ पर पूजन किया।

जनमेदिनी को दिलाए व्यसनमुक्ति और पर्यावरण संरक्षण के लिए संकल्प

आद. डॉ. चिन्मय जी दिनौरा के महायज्ञ में श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए

दिनौरा, संभल। उत्तर प्रदेश

17 से 20 दिसम्बर 2023 की तिथियों में संभल जिले के ग्राम दिनौरा में 108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं को भावनात्मक रूप से यज्ञ से जोड़ते हुए कहा कि अपने उद्देश्यों के प्रति सकारात्मक भाव रखकर निरंतर आगे बढ़ते रहने का नाम ही जीवन है। वे महायज्ञ में आयोजित युवा सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

आत्मचेतना के परिशोधन से संभावनाओं के द्वार स्वतः खुलते जाते हैं।

शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि ने कहा कि मनुष्य अगर अपने जीवन का परिशोधन करे तो संभावनाओं के द्वार स्वतः खुलते जाते हैं। अपना महत्त्व समझना चाहिये और अपने विचार व कर्मों को शुद्ध करना चाहिए। अपने जीवन का मूल्य समझते हुए अपनी अंतर्चेतना को जगाने के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। गायत्री महामंत्र का महत्त्व बताते हुए उन्होंने कहा कि गायत्री मंत्र के प्रभाव से साधक का व्यक्तित्व ऊँचा उठता है और वह आत्मबल संपन्न बनता चला जाता है।

व्यसनमुक्ति एवं पर्यावरण शोधन

दिनौरा के 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में व्यसनमुक्ति और पर्यावरण शोधन के लिए वृक्षारोपण पर अत्यधिक महत्त्व दिया गया। कार्यक्रम संचालन के लिए शान्तिकुञ्ज से गई श्री योगेश शर्मा, श्री ओंकार पाटीदार आदि की टोली ने यज्ञ का महत्त्व बड़े विस्तार से समझाया। उन्होंने कहा कि यज्ञ से शारीरिक, मानसिक और वैचारिक स्थिति में हजार गुना बदलाव आता है। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने युवा सम्मेलन में हजारों युवाओं में व्यसनमुक्ति और पर्यावरण शोधन के लिए बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण करने के संकल्प जगाए।

दिनौरा के महायज्ञ में अनेक स्थानीय जनप्रतिनिधियों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। सर्वश्री विजयपाल, ओमपाल, संतोष गुप्ता, संजीव कुमार, कुलदीप शर्मा, भूरेलाल शर्मा, भगत सिंह, सोपाली सिंह और शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि सूरजपाल सिंह आदि का विशेष सहयोग रहा।

शक्तिपीठों के दर्शन, आत्मीयता संवर्धन

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी गायत्री शक्तिपीठ दिनौरा और गायत्री शक्तिपीठ बबराला भी पहुँचे, माँ गायत्री का पूजन किया, प्रखर प्रज्ञा-सजल श्रद्धा का अनावरण कर परिजनों और प्रबुद्ध जनों से भेंट की।

बिसवाखुर्द (सीतापुर) और बह्मनपुर (लखीमपुर खीरी) के 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञों में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने युग सृजेताओं का उत्साह बढ़ाया

सीतापुर। उत्तर प्रदेश

राष्ट्र और संस्कृति के उत्थान के लिए संकल्पित, समर्पित करोड़ों युवाओं के प्रेरणादीप आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने 17 दिसम्बर को सीतापुर जिले के बिसवाखुर्द में चल रहे 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में भाग लिया। दीपयज्ञ के अवसर पर उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए उन्होंने 'अप्प दीपो भव' का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि युगऋषि के संकल्पों को साकार कर मानवता को नई राह दिखाने का परम पूज्य गुरुदेव का संकल्प और हमारा लक्ष्य बड़ा है। संघर्ष के पथ पर चल कर ही यह सफलता प्राप्त होगी।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने विचार क्रान्ति को इस युग की महानतम आवश्यकता बताया और इसके लिए घर-घर जाकर परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यही इस युग का सबसे बड़ा परमार्थ है, इसी पथ पर चलकर हमें अपने जीवन को सार्थक करना है।

आदरणीय डॉ. पण्ड्या जी सीतापुर जिले के महमूदाबाद स्थित गायत्री शक्तिपीठ पहुँचे, माँ गायत्री का पूजन करने के उपरांत परिजनों से भेंट की।

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज की प्राण ज्योति के प्रखर पुंज आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दिनांक 18 दिसम्बर को लखीमपुर जिले के बह्मनपुर में चल रहे 108 कुण्डीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ की विशाल जनसभा को संबोधित किया। उन्होंने वर्तमान युग में विश्वव्यापी वैचारिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों का उल्लेख करते हुए कहा कि परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य वह सोना है, जिसे जिसने छुआ वह सोना बनता चला गया। उन्होंने कहा कि यज्ञ हमें जीवन में श्रेष्ठता का वरण करने के लिए प्रेरित करता है। हमें मानवता के उत्थान के लिए तन, मन, धन से जुट जाना है।

स्थानीय युवाओं ने शान्तिकुञ्ज के आह्वान को हृदयंगम करते हुए दुर्व्यसनों को उखाड़ फेंकने और सद्विचारों की स्थापना के लिए अखंड ज्योति को घर-घर तक पहुँचाने का संकल्प लिया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने गायत्री शक्तिपीठ में माँ गायत्री की प्राण प्रतिष्ठा की। वे गायत्री शक्तिपीठ निघासन, गायत्री चेतना केंद्र बह्मनपुर और गायत्री प्रज्ञा मंडल बोझावा भी गए, बड़ी श्रद्धा के साथ देवप्रतिमाओं का पूजन करते हुए विश्व मानवता के कल्याण हेतु प्रार्थना की। इन केन्द्रों पर उपस्थित परिजनों से भेंट कर जन्मशताब्दी वर्ष-2026 के निमित्त बड़े लक्ष्य निर्धारित करने तथा उन्हें संकल्पपूर्वक पूरा करने के लिए प्रेरित किया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी बिसवाँखुर्द के महायज्ञ में आयोजकों और सक्रिय कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए

लखीमपुर खीरी के कार्यकर्त्ताओं के संग आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

हमारी आत्मा जब संकीर्णता का वरण करती है तब निज की विशेषता खो देती है। हम विश्व से समभाव होकर ही अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कर सकते हैं, वास्तविक आनन्द की अनुभूति कर सकते हैं।

संतों की भूमि सौराष्ट्र (गुजरात) की दिव्यता का नमन और नवजागरण का संदेश

अपने विशिष्ट व्यक्तित्व, दिव्य वाणी, आत्मीयता और स्नेहाभिसिंचन के माध्यम से हर हृदय पर अमिट छाप छोड़ने वाले शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी 24 एवं 25 दिसम्बर 2023 की तिथियों में संतों की भूमि सौराष्ट्र में कोडीनार, गीर, सोमनाथ, पोरबंदर क्षेत्र के प्रवास पर पहुँचे थे। वहाँ उन्होंने कई कार्यक्रमों को संबोधित करते हुए युग निर्माण आन्दोलन को नवगति प्रदान करने वाला क्रान्तिकारी संदेश दिया।

भव्य स्वागत : दिनांक 24 दिसंबर 2023 को आदरणीय डॉ. चिन्मय जी के दीव एयरपोर्ट पहुँचने पर स्थानीय परिजनों ने उनका भव्य स्वागत किया। गीर-सोमनाथ के उपजोन संयोजक श्री हरिसिंहभाई डोडिया एवं केन्द्र शासित प्रदेश दीव की श्रीमती चंद्रावतीबेन वाजा, किरीट भाई एवं हँसमुखभाई शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के स्वागत के लिए एयरपोर्ट पहुँचे थे।

गाँव के प्रवेश द्वार 'श्रीराम शर्मा आचार्य प्रवेश द्वार' का लोकार्पण

दीव और सिंघाज के परिजनों ने युगशक्ति गायत्री और अखंड ज्योति को घर-घर पहुँचाने का संकल्प लिया

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सर्वप्रथम सौराष्ट्र के जूनागढ़ जिले में कोडीनार तहसील में स्थित गायत्री प्रज्ञापीठ सिंघाज पहुँचकर माँ गायत्री का पूजन किया। तत्पश्चात् वहाँ चल रही प्रज्ञा पुराण कथा के समापन सत्र को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि गुरु के रूप में हम सभी ने भगवान को पाया है। शिष्यत्व के भाव से हम सभी को गुरुदेव के सपनों को साकार करने में तत्पर होना है। जीवन के प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करें। हमें घर-घर तक पूज्य गुरुदेव की अखंड ज्योति के प्रकाश को ले जाना है।

मसरीभाई के घर

परम पूज्य गुरुदेव ने सन् 1981 में सिंघाज प्रज्ञापीठ की स्थापना के समय श्री मसरीभाई के घर रात्रि निवास किया था। वे मिशन के प्रति पूरी तरह समर्पित रहे। उन्होंने पोरबंदर में आयोजित सहस्त्र कुंडी यज्ञ में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। आज उनकी चतुर्थ पीढ़ी भी मिशन के लिए समर्पित है। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी श्री मसरीभाई के परिवार से मिलने भी गए।

श्रीराम शर्मा आचार्य प्रवेश द्वार

1 फरवरी 1981 को गीर सोमनाथ जिले के सिंघाज ग्राम में परम पूज्य गुरुदेव का आगमन हुआ था। इस ग्राम के वरिष्ठ परिजनों के हृदय में पूज्य गुरुदेव के सानिध्य की वह अनुभूतियाँ आज भी जीवंत है और उस पल की अनुभूति करके उनकी आँखें भर आती हैं। पूरा गाँव पूज्य गुरुदेव के प्रति अगाध श्रद्धा रखता है। श्रद्धा-समर्पण के इसी प्रतीक के रूप में गाँववासियों ने अपने गाँव के प्रवेश द्वार का नामकरण 'पं. श्रीराम शर्मा आचार्य प्रवेश द्वार' किया है, जिसका लोकार्पण आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने किया।

पोरबंदर में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने दिया संदेश

साधना से पात्रता बढ़ायें, श्रद्धा रूपी यज्ञ के प्रसाद को घर-घर पहुँचायें

सत्य, अहिंसा की प्रतिमूर्ति राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्म स्थान पोरबंदर में 108 कुंडीय राष्ट्र जागरण गायत्री महायज्ञ का आयोजन चल रहा था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी 25 दिसंबर को पोरबंदर पहुँचे, जहाँ गायत्री शक्तिपीठ में जामनगर उपजोन संयोजक श्री चमनभाई वसोया, अहमदाबाद के श्री कनुभाई पटेल, श्री रमेशभाई जोशी एवं पोरबंदर से श्री महेंद्रसिंह झाला, मंजूबेन खुदाई, श्री केशुभाई सहित बड़ी संख्या में सक्रिय परिजनों ने भावपूर्वक स्वागत किया।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की जन्मस्थली होने के साथ-साथ पोरबंदर वह दिव्य स्थली है जहाँ परम पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में 1008 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ था। आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने 108 कुंडीय गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर हजारों साधकों को संबोधित करते हुए इस दिव्य भूमि को मिले उन ऐतिहासिक, अलौकिक अनुदानों का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि परम पूज्य गुरुदेव के स्वप्न 'मनुष्य में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग के अवतरण' को साकार करने हेतु हम सभी को पूरी श्रद्धा और समर्पण भाव के साथ गुरु चरणों में अर्पित होकर भगवान के कार्य को करने के लिए आगे बढ़ना है। उन्होंने कहा कि सब कुछ छीना जा सकता है, परंतु श्रद्धा- समर्पण को कोई नहीं छीन सकता। यज्ञ के प्रसाद के रूप में हमें देवत्व के भाव को घर-घर लेकर जाना है। हम सभी सतत गायत्री उपासना-साधना से स्वयं की पात्रता को विकसित कर गुरुदेव के कार्य को करने हेतु तत्पर हो जाएँ।

पोरबंदर में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के शुभारम्भ पर प्रातः नगर में भव्य कलश यात्रा निकाली गई। अपराह्न में कार्यकर्ता गोष्ठी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। सायंकालीन सभा में दीपयज्ञ के अवसर पर शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि टोली नायक श्री योगेश शर्मा ने शान्तिकुञ्ज का दिव्य संदेश सुनाया। पूर्णाहुति के दिन सैकड़ों साधकों ने राष्ट्र की सुख, शान्ति, समृद्धि के लिए आहुतियाँ प्रदान कीं। संस्कारशाला में देवभूमि द्वारका की जिला संयोजिका श्रीमती चंद्रिकाबेन रावल के कुशल संचालन में अनेकों संस्कार सम्पन्न हुए।

पोरबंदर में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी प्रमुख कार्यकर्त्ताओं का उत्साहवर्धन करते हुए

सोमनाथ मंदिर में ज्योतिर्लिंग के दर्शन

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी एवं साथी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों ने विश्व विख्यात द्वादश ज्योतिर्लिंगों में प्रथम श्री सोमनाथ महादेव ज्योतिर्लिंग के दर्शन किए और राष्ट्र को समर्थ, सशक्त व समृद्धशाली बनने तथा सभी के निरोग जीवन एवं उत्तम स्वास्थ्य की प्रार्थना की। श्री सोमनाथ देवालय प्रबंधन समिति के सदस्यों के साथ भेंट वार्ता हुई, श्री वनराजभाई पडियार को देव स्थापना चित्र प्रदान किया।

संस्मरण

सोमनाथ महादेव के दर्शन के समय उपजोन संयोजक श्री हरिसिंहभाई डोडिया जी ने अपने जीवन के गौरवशाली क्षणों को याद किया। उन्होंने बताया कि परम पूज्य गुरुदेव के सौराष्ट्र प्रवास के समय उनके साथ रहने का सौभाग्य मिला। तत्पश्चात् परम श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी और अब आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का सान्निध्य लाभ प्राप्त करना जीवन में श्रेष्ठतम उपलब्धि है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का अभिनंदन करते देवालय प्रबंधन समिति के सदस्य

मोरबी में प्रबुद्ध वर्ग संगोष्ठी सौराष्ट्र के सौभाग्य की याद दिलाई

25 दिसंबर 2023 को पटेल समाज की वाड़ी के सभागार में प्रबुद्ध वर्ग गोष्ठी का आयोजन रखा गया था। इस अवसर पर आदरणीय डॉ. चिन्मय जी ने सौराष्ट्र की भूमि को मिले परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य अनुदानों का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि यह समय हर जागृत आत्माओं को पुकार रहा है। हम स्वयं का मूल्य समझें, अपने उद्देश्य को याद रखें और जीवन की संभावनाओं को साकार करें। यह भूमि दिव्य ऊर्जा से अनुप्राणित है। समाज और राष्ट्र के नवनिर्माण में हमारा विशिष्ट योगदान होना चाहिए।

परिजनों से चर्चा

इससे पूर्व शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि गायत्री शक्तिपीठ गए, परिजनों से भेंट कर उनकी कुशलक्षेम जानी। वे मोरबी के सक्रिय गायत्री परिजन श्री हार्दिक पटेल के द्वारा संचालित 'ग्लोबल एरा स्कूल' भी गए। वहाँ के स्टाफ को जीवन में उत्कर्ष के बहुमूल्य सूत्र प्रदान किए एवं देव स्थापना की। मोरबी के टाइल्स उद्योगपतियों के साथ चर्चा हुई, उन्हें परम पूज्य गुरुदेव के विचारों से अवगत कराया एवं शान्तिकुञ्ज आने का निमंत्रण दिया।

प्रवास के साथी : समस्त प्रवास में गुजरात जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री उदयकिशोर मिश्रा, अहमदाबाद स्थित गुजरात जोन समन्वयक श्री अश्विनभाई जानी, डॉ. विरल पटेल, डॉ. नीलमणि, कनाडा से पहुँचे श्री ध्रुवभाई पटेल, केंद्रीय टोली से सर्वश्री योगेश शर्मा, दयानन्द शिववंशी, रामावतार पाटीदार, भास्कर तिवारी, दिलथीर यादव, दिलीप पटेल जी साथ रहें। प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ के श्री किरीट भाई सोनी की टीम के पालनपुर के मनोजभाई पटेल, सूरत के पूर्वांगभाई और मनहरभाई, भावनगर के दिगंतभाई जानी, वडोदरा के जैनीशभाई पटेल, मोडासा के देवाशीष कंसारा आदि युवा साथी पायलटिंग में साथ साथ रहे।

राजस्थान में बहुत लोकप्रिय है ...

.... पृष्ठ 4 से आगे

वहाँ की वार्डन नियमित बाल संस्कार शाला और योग की कक्षा के लिए सहमत हुईं। उदयपुर के शिविरों का संयोजन ऋतु राठौर और साथी बहिन-भाइयों ने किया। आलोक जी व्यास, ललित पानेरी, के.सी. व्यास, रमेश असावा, फतह कँवर सनाढ्य जी की विशिष्ट उपस्थिति रही।

जयपुर में आयोजित हुए विशाल शिविर

1 से 3 दिसम्बर 2023 की तिथियों में कुसुम सिंघल, करधनी जयपुर के विशेष सहयोग से कई शिविर सम्पन्न हुए, जिनमें बड़ी संख्या में छात्राओं ने भाग लिया। अलंकार कॉलेज, सिरसी रोड़ जयपुर के शिविर में 1000 छात्राओं ने भाग लिया। कॉलेज के हॉस्टल की 60 कन्याओं ने स्वयं ऐसे शिविर संचालित करने के लिए विशेष प्रशिक्षण लेने का उत्साह दिखाया। उल्लेखनीय है कि इस कॉलेज की निदेशक गायत्री कटारिया गायत्री परिवार की नैष्ठिक कार्यकर्त्ता हैं। उन्हीं के अल्फा स्कूल में दूसरा शिविर हुआ, जिसमें 200 छात्राओं ने भाग लिया।

2 दिसम्बर को गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ के मुख्य ट्रस्टी धर्म सिंह जी के द्वारा कुसुम सिंघल के सहयोग से अद्भुत कन्या कौशल शिविर आयोजित किया गया। इसमें 15 विद्यालयों एवं महाविद्यालयों की 3000 कन्याओं ने भाग लिया। सभी 15 विद्यालयों के प्राचार्य अथवा अध्यापक भी उपस्थित रहे, जिन्हें गायत्री परिवार की ओर से वहाँ सम्मानित किया गया। राजस्थान जोन समन्वयक श्री ओमजी अग्रवाल, सतीश भाटी जी, डॉक्टर प्रशांत भारद्वाज और पूरे जयपुर से 150 से अधिक सक्रिय कार्यकर्त्ता बहिन-भाइयों की उत्साहवर्धक उपस्थिति रही।

गायत्री शक्तिपीठ कालवाड़ द्वारा आयोजित 15 महाविद्यालयों का शिविर

उज्ज्वल भविष्य का अविस्मरणीय अध्याय लिखने आया है वर्ष-2024

हम दृढ़ संकल्प और भरपूर उत्साह के साथ बड़े लक्ष्य की ओर बढ़ें। - श्रद्धेया शैल जीजी

अखिल विश्व गायत्री परिवार ने सर्वे भवन्तु सुखिनः की सामूहिक प्रार्थना के साथ वर्ष 2024 की प्रथम किरण का स्वागत किया। इस अवसर पर देश-विदेश से आये हजारों परिजनों ने 27 कुण्डीय यज्ञशाला में विशेष आहुतियाँ समर्पित करते हुए अंग्रेजी कैलेण्डर के नववर्ष का अभिनंदन किया। श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी ने सभी से व्यक्तिगत मुलाकात करते हुए सबको नववर्ष की शुभकामनाएँ दी।

श्रद्धेयद्वय ने अपने शुभकामना संदेश में वर्ष 2024 में नये संकल्प और नए उत्साह के साथ मानवता के उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित भाव से सक्रिय होने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि इस वर्ष हमें नारी सशक्तीकरण, युवा जागरण अभियानों को और गति देनी है। उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 मानव मात्र उज्ज्वल भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने आया है। अयोध्या में जन्मभूमि में होने जा रही भगवान राम की प्राण प्रतिष्ठा पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह ऐसा वर्ष है, जिसे सदियों तक याद रखा जायेगा।

श्रद्धेय डॉ. साहब एवं जीजी नववर्ष पर शुभकामनाएँ देते हुए

श्रद्धेया शैल जीजी ने कहा कि यह वर्ष अच्छे विचारों को क्रियान्वित करने और अधूरे सपनों को पूरा करने हेतु दृढ़ संकल्प के साथ योजनाबद्ध कार्यक्रम अपनाते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करने आया है।

देवसंस्कृति विश्वविद्यालय परिवार, ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान एवं शान्तिकुञ्ज परिवार ने गायत्री परिवार प्रमुखद्वय से भेंटकर नववर्ष के लिए विशेष मार्गदर्शन प्राप्त किया। साथ ही विभिन्न संस्कार बड़ी संख्या में सम्पन्न कराये गये।

पूज्य गुरुदेव के विचार मन को परिष्कृत करते हैं और गायत्री उपासना जीवन को ऊर्जा से भर देती है।

विशेष उद्बोधन

युग परिवर्तन किसी व्यक्ति का नहीं, इस सृष्टि के नियंता का संकल्प है, जो सुनिश्चित रूप से साकार होगा। हम सबको उसमें भागीदारी का सौभाग्य मिल रहा है। मैं परम पूज्य गुरुदेव वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के निर्देशानुसार शंख बजाते हुए (गायत्री महामंत्र का विस्तार करते हुए) चल रहा हूँ, आप सब भी मेरे साथ चलिए।

दिनांक 22 दिसम्बर 2024 को यह आह्वान है अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का, जो उन्होंने शान्तिकुञ्ज में आए विभिन्न शिविरों के साधकों को संबोधित करते हुए किया। अपने इस विशेष उद्बोधन में उन्होंने वर्तमान युग में मानवमात्र के कल्याण के लिए अपने जीवन से जुड़े कई विशिष्ट प्रसंगों के साथ परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचार और गायत्री उपासना की सामर्थ्य पर प्रकाश डाला।

करोड़ों लोगों के प्रेरणा स्रोत आदरणीय डॉक्टर साहब ने कहा कि गायत्री साधना न केवल साधक को ऊँचा उठने में मदद करती है, वरन् इस मंत्र के जप से साधक का तन, मन दोनों सुदृढ़ होते हैं। मुझे इस महामंत्र के जप से अनेक लाभ प्राप्त हुए हैं। आपको भी मिल सकते हैं। मानसिक स्तर को परिष्कृत करने वाले परम पूज्य गुरुदेव के सद्विचार और आध्यात्मिक उर्जा से पोषित करने वाले गायत्री महामंत्र को हमें भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में फैलाना है।

गीता व गायत्री विषयक कई पुस्तकों के लेखक श्रद्धेय डॉक्टर प्रणव पण्ड्या जी ने कहा कि गायत्री सार्वभौम है, अपनी आत्मिक और आध्यात्मिक उन्नति चाहने वाला पूरी दुनिया का कोई भी व्यक्ति गायत्री मंत्र की उपासना-साधना कर सकता है। लगन व निष्ठा से किए गए प्रत्येक कार्य में सफलता अवश्य मिलती है।

आरंभ में युगगायक श्री ओंकार पाटीदार व श्री प्रेमलाल बिरला की टीम ने 'गुरु की छाया में शरण जो पा गया...' और 'जीवन के देवता को आओ तनिक सँवारे...' गीतों से श्रोता साधकों को भक्तिभाव से सराबोर कर दिया।

श्रद्धेया जीजी के जन्मदिन-गीता जयंती पर देश-विदेश के लाखों लोगों ने दी शुभकामनाएँ

यह दैवी अभियान सतत आगे बढ़ता ही रहेगा। -श्रद्धेया जीजी

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में गीता जयंती-23 दिसम्बर के दिन अखिल विश्व गायत्री परिवार की प्रमुख स्नेहसलिला श्रद्धेया शैल जीजी का 71वाँ जन्मदिन अत्यंत उत्साह के साथ मनाया गया। गायत्री परिवार की महान परम्परा के अनुरूप आरंभ में दीपयज्ञ के साथ करुणामयी श्रद्धेया जीजी के यशस्वी दीर्घ जीवन की प्रार्थना परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी से की गई। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने उन्हें मंगल तिलक कर पुष्पहार भेंट किया। पश्चात् समस्त शान्तिकुञ्ज, देसंविवि परिवार ने अपने-अपने ढंग से स्नेहाभिवादन करते हुए उन्हें शुभकामनाएँ दीं।

शान्तिकुञ्ज में गायत्री विद्यापीठ के नौनिहालों से लेकर समस्त कार्यकर्त्ता अपनी शुभकामनाएँ लेकर श्रद्धेया जीजी, श्रद्धेय डॉक्टर साहब तक पहुँचे। किसी के कंठ से श्रद्धेया जीजी की करुणा, ममता एवं सत्प्रेरणाओं का स्मरण करने वाले स्वर थे, तो किसी के हाथों में हृदय में उमड़ते उल्लास के प्रतीक गुलाब और गुलदस्ते थे। नन्हें नौनिहाल अपने मनोभावों को उकेरते हुए चित्र-विचित्र शुभकामना संदेश लेकर पहुँचे थे। सभी ने कर्त्तव्यनिष्ठा की जीवन्त 'गीता' के विविध अध्यायों का स्मरण कराने वाली श्रद्धेया जीजी को उन्हीं की प्रेरणाओं के अनुरूप परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के जीवन पथ पर बढ़ते चलने का आश्वासन दिया।

श्रद्धेया शैल जीजी के जन्म दिवस पर देश-विदेश से फोन और सोशल मीडिया के माध्यम से हजारों की संख्या में शुभकामना संदेश आए।

इससे पूर्व श्रद्धेया शैलदीदी के जन्मदिन के अवसर पर प्रातः 27 कुण्डीय यज्ञ में उनके उत्तम स्वास्थ्य हेतु यज्ञाहुतियाँ डाली गयीं। सैकड़ों पीतवस्त्रधारी नर-नारियों ने मंगल प्रभात फेरी निकालीं। वहीं श्रद्धेया शैलदीदी के उत्तम एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना के साथ सामूहिक प्रार्थना की गयी। सायंकाल गीता जयंती के अवसर पर उत्साहपूर्वक दीपमहायज्ञ संपन्न हुआ।

श्रद्धेया जीजी के जन्मदिन पर उपहार भेंट करते परिजन

स्नेहसलिला जीजी और श्रद्धेय डॉ. साहब ने परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के बाद अखिल विश्व गायत्री परिवार के करोड़ों लोगों में प्यार लुटाया है, अपने स्नेहानुदानों से यह देव परिवार निरंतर बढ़ाया है। उनके जन्मदिन पर नारी उत्कर्ष के लिए किए जा रहे विशेष प्रयासों का प्रमुख रूप से स्मरण किया गया। उन्हीं के नेतृत्व में आज शान्तिकुञ्ज की अधिकांश गतिविधियों में बहिनों की अग्रणी भागीदारी है। ब्रह्मवादिनी टोलियाँ पूरे देश में बड़े-बड़े कार्यक्रमों का संचालन कर रही हैं। आओ गढ़ें संस्कारवान पीढ़ी और कन्या कौशल शिविरों का अभियान चलाया जा रहा है। श्रद्धेया शैलदीदी कहती हैं-''यह दैवीय शक्ति द्वारा संचालित मिशन है और यह सतत आगे बढ़ता ही जायेगा। कोई भी झंझावात इसे हिला नहीं सकेगा।''

शान्तिकुञ्ज को मिला श्रीराम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भागीदारी का आमंत्रण

श्रीराम जन्मभूमि न्यास की ओर से अखिल विश्व गायत्री परिवार प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को अयोध्या से श्रीराम मन्दिर प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भागीदारी का आमंत्रण मिला है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठप्रचारक एवं विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय संरक्षक आदरणीय श्री दिनेश चंद्र जी अपने स्थानीय प्रतिनिधियों सहित आमंत्रण पत्र लेकर गायत्री तीर्थ शान्तिकुञ्ज आए। श्रद्धेय द्वय ने भारतीय संस्कृति के उत्थान के इस महान कार्य के प्रति अखिल विश्व गायत्री परिवार की ओर से प्रसन्नता व्यक्त की, साधुवाद दिया। श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने अतिथियों को परम पूज्य गुरुदेव का साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

आमंत्रण देने शान्तिकुञ्ज आए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद के वरिष्ठ पदाधिकारी

राष्ट्रीय गणतंत्र दिवस परेड में भाग ले रही हैं देसंविवि की छात्राएँ

भारत सरकार युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस परेड शिविर 2024 में उत्तराखण्ड से कुल चार विद्यार्थियों का चयन हुआ है। इनमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय की छात्राएँ कु. तनुजा रावत एवं वेदा देवी भी शामिल हैं। ये छात्राएँ 26 जनवरी को कर्तव्यपथ, नई दिल्ली में आयोजित होने वाली मुख्य परेड में भाग लेंगी।

विदित हो कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 20 से 29 नबंवर में प्री.आर.डी.परेड शिविर का आयोजन किया गया था। इसमें छः राज्यों-उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार एवं झारखण्ड के राष्ट्रीय सेवा योजना से जुड़े 200 स्वयंसेवियों ने भाग लिया था। निर्दिष्ट मापदण्डों जैसे वजन, लंबाई, दौड़, परेड एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के आधार पर मुख्य गणतंत्र दिवस परेड, नई दिल्ली के लिए कुल 40 विद्यार्थियों का चयन किया गया।

तनुजा रावत एवं वेदा देवी को बधाई देते प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

कु. तनुजा रावत एवं वेदा देवी की गौरवशाली उपलब्धि के लिए पूरे विश्वविद्यालय परिवार ने बधाई दी। प्रतिकुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दोनों को बधाई देते हुए इस उपलब्धि को देसंविवि में मिलने वाले सकारात्मक चिंतन और अनुशासन का प्रभाव बताया।

देसंविवि का गौरव

राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक डॉ. उमाकान्त इंदौलिया ने बताया कि पिछले लगभग 18 वर्षों से मुख्य गणतंत्र दिवस परेड, नई दिल्ली में प्रतिवर्ष देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों का चयन होता आ रहा है। इस वर्ष तनुजा रावत एवं वेदा देवी के चयन ने इस गौरवमयी अध्याय को जारी रखा है।

मुक्ति और मोक्ष

मुक्ति का अर्थ कर्त्तव्यों और मर्यादाओं को झुठलाना नहीं, वरन क्षुद्रताओं और दुष्टताओं से छुटकारा पाना है। अपने चेतना दीपक का बुझ जाना मोक्ष की व्याख्या नहीं है, वरन् यह है कि हम ससीम से असीम बनें, बिन्दु से सिन्धु में विकसित हों और नन्हें से बीज की स्थिति में पड़े रहने की दशा अस्वीकार करते हुए गलने का साहस सँजोएँ और विशाल वृक्ष बनकर लहलहाएँ। - **सन्त वास्वानी**

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक-** प्रमोद शर्मा। **पता :-** शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.01.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No.
UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26